ISSN-0971-8397

# योजना

मार्च 2024

विकास को समर्पित मासिक

₹ 22

# डिजिटल युग में कला और संस्कृति

**प्रकाशन विभाग**
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

अब
उपलब्ध

# करियर की चिंताओं को दीजिये विराम एक किताब में पाएं अनेक समाधान

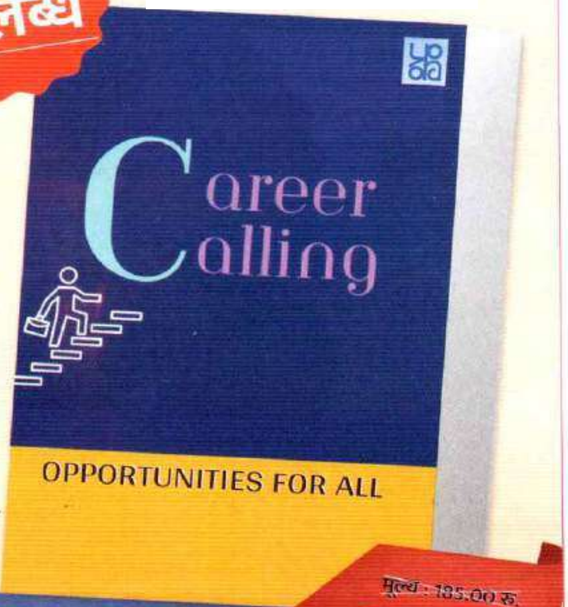


मूल्य : 185.00 रु.
विशेष मूल्य
166.50 रु.

यहां
उपलब्ध

www.publicationsdivision.nic.in

**पुस्तक दीर्घा**
सूचना भवन, लोधी रोड, नई दिल्ली - 110003

www.amazon.in

इस पुस्तक के विषय में किसी व्यापार सम्बन्धी जिज्ञासा के लिए संपर्क करें :
फोन : 011 24365609 | ईमेल : businesswng@gmail.com

@publicationsdivision | @Employ_News | @DPD_India | @dpd_india

ISSN-0971-8397
# योजना
वर्ष : 68 | अंक : 03
मार्च 2024
फाल्गुन-चैत्र, शक संवत् 1945
मूल्य : ₹ 22
पृष्ठ : 56

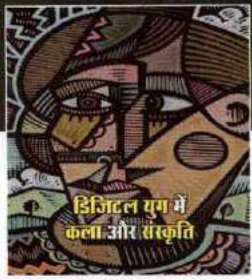


**प्रधान संपादक**
कुलश्रेष्ठ कमल

**संपादक**
डॉ ममता रानी

**संयुक्त निदेशक (उत्पादन)**
डी के सी हृदयनाथ

**आवरण : बिन्दु वर्मा**

**संपादकीय कार्यालय**
648, सूचना भवन, सीजीओ परिसर,
लोदी रोड, नई दिल्ली-110003
ईमेल: yojanahindi@gmail.com

**योजना** का लक्ष्य देश के आर्थिक विकास से सम्बन्धित मुद्दों का सरकारी नीतियों के व्यापक संदर्भ में गहराई से विश्लेषण कर इन पर विमर्श के लिए एक जीवंत मंच उपलब्ध कराना है।

**योजना** में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के व्यक्तिगत हैं। ज़रूरी नहीं कि ये लेखक भारत सरकार के जिन मंत्रालयों, विभागों अथवा संगठनों से संबद्ध हैं, उनका भी यही दृष्टिकोण हो।

**योजना** में प्रकाशित विज्ञापनों की विषयवस्तु के लिए योजना उत्तरदायी नहीं हैं।

**योजना** में प्रकाशित आलेखों में प्रयुक्त मानचित्र व प्रतीक आधिकारिक नहीं है, बल्कि सांकेतिक हैं। ये मानचित्र या प्रतीक किसी भी देश का आधिकारिक प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं।

**योजना** लेखकों द्वारा आलेखों के साथ अपने विश्वसनीय स्रोतों से एकत्र कर उपलब्ध कराए गए आंकड़ों/तालिकाओं/इन्फोग्राफिक्स के सम्बन्ध में उत्तरदायी नहीं है। योजना किसी भी लेख में केस स्टडी के रूप में प्रस्तुत किसी भी ब्रांड या निजी संस्थाओं का समर्थन या प्रचार नहीं करती है।

**योजना** घर मंगाने, शुल्क में छूट के साथ दरों व प्लान की विस्तृत जानकारी के लिए **पृष्ठ-53** पर देखें।

**योजना** की सदस्यता शुल्क जमा करने के बाद पत्रिका प्राप्त होने में कम से कम 8 सप्ताह का समय लगता है। इस अवधि के समाप्त होने के बाद ही योजना प्राप्त न होने की शिकायत करें।

**योजना** न मिलने की शिकायत या पुराने अंक मंगाने के लिए नीचे दिए गए ई-मेल पर लिखें -
pdjucir@gmail.com
या संपर्क करें-
दूरभाष : 011-24367453
(सोमवार से शुक्रवार सभी कार्य दिवस पर प्रातः 9:30 बजे से शाम 6:00 बजे तक)

**योजना** की सदस्यता की जानकारी लेने तथा विज्ञापन छपवाने के लिए संपर्क करें–
**अभिषेक चतुर्वेदी**, संपादक, पत्रिका एकांश
प्रकाशन विभाग, कमरा सं. 779, सातवां तल,
सूचना भवन, सीजीओ परिसर, लोदी रोड,
नयी दिल्ली-110003

## इस अंक में...

**6** डिजिटल युग में पारंपरिक कला के स्वरूप
मनीषा अग्रवाल एमवीजी

**11** भारत में लोकप्रिय संगीत
डॉ कस्तूरी पायगुडे

**17** आधुनिक तकनीकों और संदर्भों के जरिये लोक कला की पुनर्कल्पना
डॉ प्रांशु समदर्शी

**22** 'बुद्धिमत्ता के साथ कला' से 'कृत्रिम मेधा' तक
डॉ मनीष कर्मवार, आभाष के सौरव

**31** उपचार और अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है कला
डॉ धारिणी मिश्रा, पारुल काला

**37** कला संग्रहालयों पर डिजिटल प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया का प्रभाव
सोमा घोष

**42** स्ट्रीट आर्ट

**47** कथा कॉमिक्स की
अंशुमाली झा

**52** पुस्तक चर्चा
सेवन्टी फाइव ईयर्स सेवन्टी फाइव फिल्म्स इंडियाज़ सिनमैटिक जर्नी

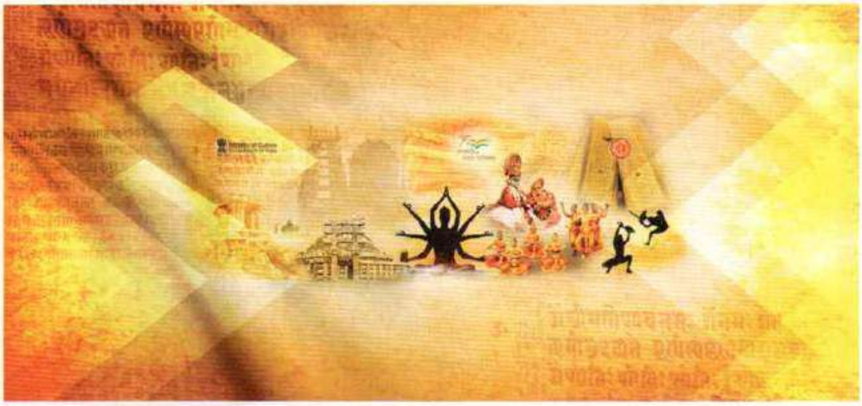

## आगामी अंक : पारिस्थितिकी तंत्र

प्रकाशन विभाग के देशभर में स्थित विक्रय केन्द्रों की सूची के लिए देखें पृ.सं. 41

**योजना** हिंदी, असमिया, बांग्ला, अंग्रेज़ी, गुजराती, कन्नड़, मलयालम, तमिल, तेलुगु, मराठी, ओडिया, पंजाबी तथा उर्दू में एक साथ प्रकाशित।

# अब उपलब्ध

## नये कलेवर, आकार, सभी रंगीन पृष्ठों और नए स्तम्भों के साथ

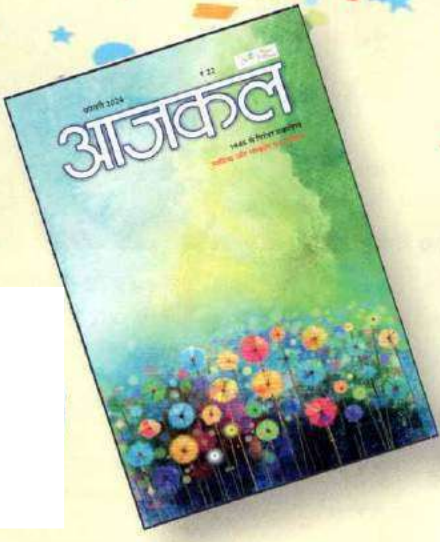

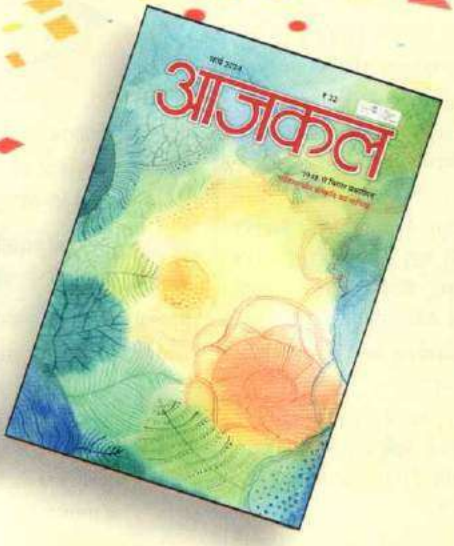


## हिन्दी साहित्य विषय के प्रतियोगियों के लिए उपयोगी

### आज ही अपनी प्रति खरीदें

सदस्यता के लिए स्कैन करें

प्रकाशन विभाग

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार

सूचना भवन, सी जी ओ कॉम्पलेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली -110003

वेब साइटः publicationsdivision.nic.in

# संपादकीय

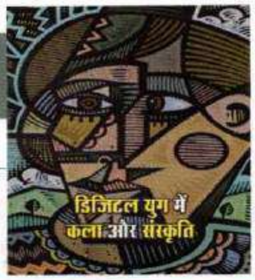


# डिजिटल युग में कला

कला एक ऐसी अभिव्यक्ति है जिसे हमारी इंद्रियां हमारे आसपास की चीजों को एक उद्दात परिप्रेक्ष्य प्रदान करते हुए अनुभव और आत्मसात करती हैं। यह हमारे मन को अपने बाहर और अंदर जाकर सोचने का मौका देती है। कला में अक्सर प्रत्यक्ष को व्याख्या के लिए छोड़ बारीकियों को सामने लाने की क्षमता है। यह मानवीय अभिव्यक्ति का एक शक्तिशाली माध्यम है जो अवरोधों को तोड़ अनूठी पहचान कायम करती है।

भारत, अनादि काल से, कला का केंद्र रहा है। चाहे दृश्य कला हो या प्रदर्शन कला, वास्तुकला हो या कशीदाकारी। भारत में कला की यात्रा विभिन्न युगों और क्षेत्रों में प्रचलित संस्कृतियों और मान्यताओं के अलग-अलग प्रभाव के साथ विकसित हुई है। हमारी प्राचीन चित्रकला, कलाकृतियां और उनके इर्द-गिर्द बुनी गई संस्कृति इतिहासकारों और समाजशास्त्रियों के लिए समाज और लोगों को समझने का एक अनिवार्य माध्यम रही हैं।

तेजी से बदलते डिजिटल युग में कला और संस्कृति के क्षेत्र में भी नाटकीय बदलाव हो रहे हैं। रचनात्मकता और प्रौद्योगिकी के संगम से एक नया युग आया है जहां नवाचार की कोई सीमा नहीं है और पुरानी सीमाएं धूमिल हुई हैं। डिजिटल युग के आगमन के बाद से कला और संस्कृति के क्षेत्र में बहुत ज्यादा उथल-पुथल हुई है। इंटरनेट युग ने रचनात्मकता का लोकतंत्रीकरण किया है। इसने कलात्मक अभिव्यक्ति को सभी के लिए सुलभ बना दिया है। प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करके इच्छुक कलाकार आसानी से सुलभ सॉफ्टवेयर, सोशल मीडिया और ऑनलाइन गैलरी के उपयोग से अपना काम दुनिया भर के दर्शकों के सामने प्रस्तुत कर सकते हैं।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का अब संस्कृति के केंद्र के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है, यह प्लेटफॉर्म चर्चाओं, रुझानों और यहां तक कि सामाजिक आंदोलनों को आकार देते हैं। लोकप्रिय संस्कृति को डिजिटल युग में उभरे इंटरनेट सुपरस्टारों, इन्फ्लुएंसर्स (प्रभावकों) और वायरल सामग्री द्वारा आकार दिया जा रहा है। इंटरैक्टिव कहानियों, पॉडकास्ट, वेब शृंखला और ट्रांसमीडिया अनुभवों के आगमन के साथ, डिजिटल युग ने बात कहने की कला को पूरी तरह से बदल दिया है। श्रोताओं और दर्शकों से जुड़ने के लिए सृजनकर्ताओं द्वारा मल्टीमीडिया और परस्पर संवाद का उपयोग किया जा रहा है। आजकल गैलरी और संग्रहालयों ने भी आभासी प्रदर्शनियों और आभासी दौरों की शुरुआत की है इससे कला प्रेमियों को अपने घरों में आराम से बैठकर विभिन्न कलाएं देखने की सहूलियत हुई है। डिजिटल कला स्वरूपों (एनएफटी) ने कला जगत को पुनः परिभाषित किया है। इससे कलाकारों को विशिष्ट सम्पदा के रूप में बाजार में पेश करने की सहूलियत मिली है। एनएफटी कलाकारों को भौतिक दुनिया से परे अपनी कलाकृति बेचने या किराए पर देने की भी सहूलियत देती है। ड्रोनों के उपयोग से कला और सांस्कृतिक आयोजनों का अनुभूत प्रदर्शन डिजिटल प्रौद्योगिकियों के साथ कला के विविधीकरण का एक और क्षेत्र है।

जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी कलाकृति के परिदृश्य को बदल रही है, नैतिक विचार तेजी से प्रासंगिक होते जा रहे हैं। डिजिटल युग में कला के स्वामित्व, कॉपीराइट और मूल्य से जुड़े मामले सामने आए हैं। जैसे-जैसे हम इन मामलों से जूझते हैं ये समस्याएं हमारी बदलती डिजिटल संस्कृति का आवश्यक घटक बन जाती हैं। डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म ने सांस्कृतिक आदान-प्रदान को आसान बना दिया है, यह दूसरी संस्कृतियों के लोगों के साथ बातचीत करने और उनके बारे में जानने का मंच उपलब्ध कराता है। लेकिन साथ ही यह प्रामाणिकता और सच्चाई पर भी कई सवाल खड़े करता है।

रचनात्मक अभिव्यक्तियों के सृजन, उपयोग और आदान प्रदान को डिजिटल युग ने फिर से परिभाषित किया है, कला और संस्कृति अज्ञात क्षेत्रों की तरफ धकेले जा रहे हैं। डिजिटल युग में सोशल मीडिया, वैश्वीकरण और प्रौद्योगिकी सभी तरह के अवसरों और कठिनाइयां पर असर डालते हैं। यह बहुत जरूरी हो जाता है कि हम डिजिटल युग द्वारा उठाए गए नैतिक और सांस्कृतिक मुद्दों को स्वीकार करें, साथ ही हम जिस गतिशील वातावरण से गुजर रहे हैं उसे देखते इसकी क्रांतिकारी क्षमता को समझना भी उतना ही महत्वपूर्ण हो जाता है। योजना के इस अंक के माध्यम से, हम उन प्रेरणाओं और सफलताओं की खोज करने के लिए निकले हैं जिन्होंने हमारे आधुनिक रचनात्मक परिदृश्य को नया आकार दिया है, हम यह जानने की कोशिश कर रहे हैं कि डिजिटल युग में कला और संस्कृति कैसे बदल रही है। ❑

# डिजिटल युग में पारंपरिक कला के स्वरूप

**मनीषा अग्रवाल एमवीजी**

लेखिका ने सभ्यता और उसकी धारणाओं के बारे में किताबें और कहानियां लिखी हैं, जिनमें प्रकाशन विभाग की पुस्तक 'रीसरेक्टिंग दुर्बल इंडियन आर्ट फॉर्म्स' भी शामिल है।
ईमेल: mannu74vivek@gmail.com

**किसी भी रूप में कला मानव मस्तिष्क की सृजन क्षमता की अभिव्यक्ति है। क्षमता अंतर्निहित हो सकती है, लेकिन यह हर इंसान में मौजूद है... जीवन की ऊर्जा की शक्ति और जीवंतता के रूप में छिपी हुई है। कलात्मक परंपराएं बदलती रही हैं और बदलती रहेंगी क्योंकि रचनात्मकता निरंतर विकसित होने वाली घटना है। डिजिटल रूप से बढ़ती तकनीक इसकी यात्रा को मानव जाति के साथ समन्वयित रखने में सहायक रही है।**

किसी भी सभ्यता की कलात्मक परंपराएं उसके सांस्कृतिक ढांचे का निर्माण करती हैं। इसकी प्रगतिशील यात्रा विभिन्न कलाओं और उनके उत्कृष्ट रूपों द्वारा प्रदान की गई एक रूपरेखा के साथ बनाई गई है, एक ऐसा तथ्य जो बहुविविधता से जुड़े होने पर भी आज के डिजिटल युग में भी नहीं बदला है। आज की पीढ़ी ने बहुआयामी समीकरणों पर विचार-विमर्श शुरू कर दिया है और संभवतः उन्हें हमारी कलात्मक परंपराओं को प्रौद्योगिकी के साथ विलय का रास्ता खोजे बिना संतुष्ट नहीं किया जा सकता है।

सहस्राब्दियों से जो कुछ भी हमारे साथ चला वह आज हमारी सांस्कृतिक संस्था बन गया है। वैश्विक परिप्रेक्ष्य के दृष्टिकोण से बात करते हुए, - क्षणिक को त्यागकर, हमारी यात्रा के हर पड़ाव पर शाश्वत का आह्वान करते हुए हमने सर्वोत्कृष्टता को बरकरार रखा है और अब हम एक और दहलीज के कगार पर हैं, वह है डिजिटल युग। हमारी उत्कृष्ट सांस्कृतिक/कलात्मक परंपराओं के संरक्षण, विस्तार और उत्थान के लिए हमारा दृष्टिकोण क्या हो सकता है? इसका उत्तर शायद हमारे कला रूपों को आज की भविष्यवादी दुनिया - डिजिटल दुनिया - से जोड़ना है।

डिजिटल इंटरफ़ेस के माध्यम से विभिन्न कलाप्रवीण तकनीकों को जोड़ने का क्रांतिकारी विचार पहले से ही कई क्षेत्रों में कई कलाकारों द्वारा तेजी से अपनाया जा रहा है। इनमें मूर्तिकार, कलाकार, चित्रकार, लेखक, डिज़ाइनर, कांच और मिट्टी के बर्तन बनाने वाले कारीगर, बुनकर, वास्तुकार और बहुत कुछ शामिल हैं। इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों और कंप्यूटर कोड का उपयोग करके डिजिटल कलाकार विशिष्ट डिज़ाइन टैबलेट के माध्यम से अपनी अनूठी कला-कृतियां बनाने में सक्षम हैं। इसने - डिज़ाइन नवाचार, बढ़ी हुई पहुंच, काम करने की सुविधा, त्वरित साझाकरण, उत्पादकता में वृद्धि, व्यापक पहुंच और कई अन्य लोगों के बीच मान्यता प्राप्त की है तथा उनके पुरस्कारों को कई गुना बढ़ा दिया है।

कला का डिजिटलीकरण कलाकार को अत्यधिक विविधता और सहजता प्रदान करता है। विज़ुअलाइज़ेशन के साथ प्रयोग विभिन्न विषयों के मिश्रण को सक्षम बनाता है, अद्वितीय और

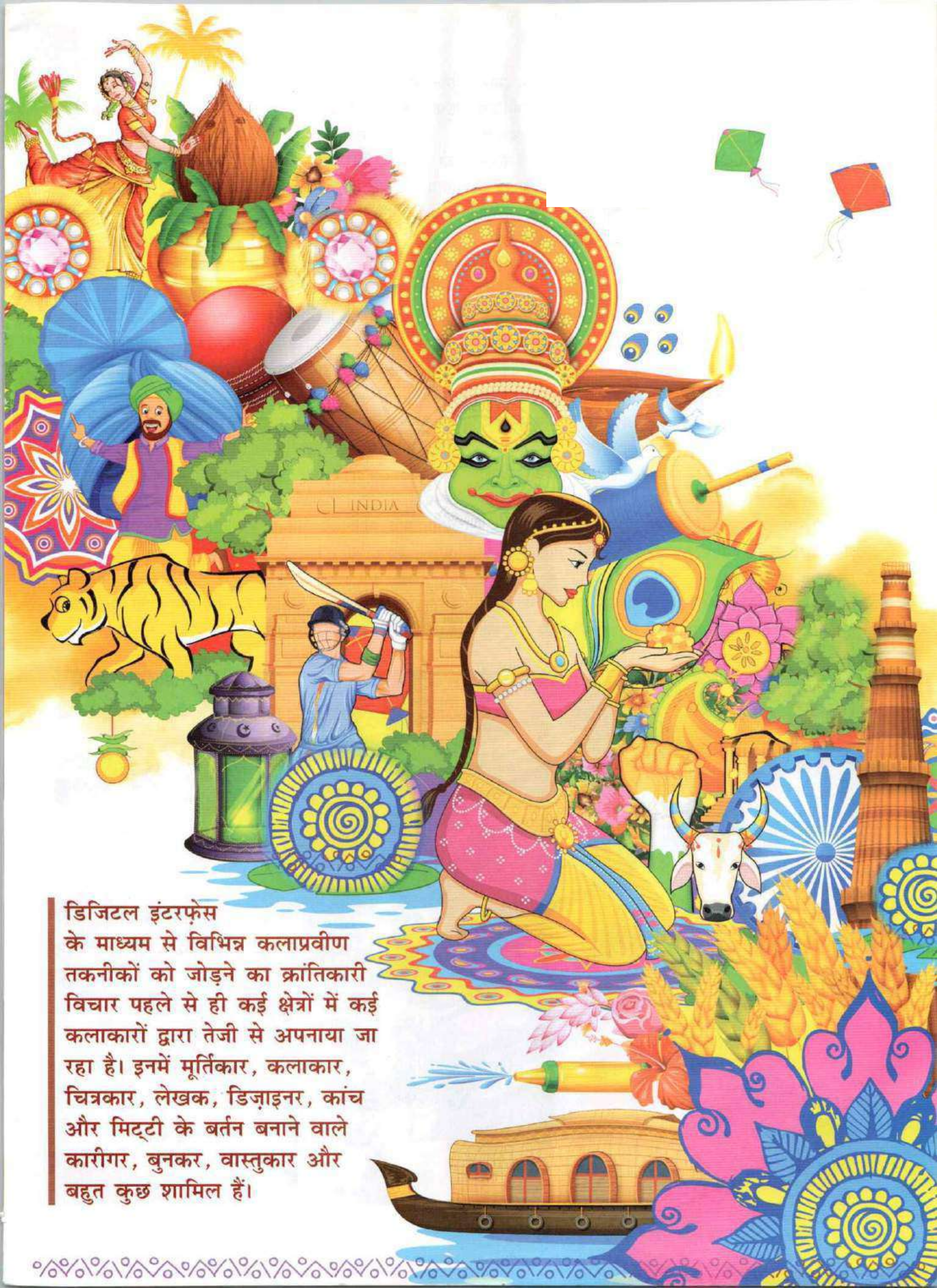


डिजिटल इंटरफ़ेस के माध्यम से विभिन्न कलाप्रवीण तकनीकों को जोड़ने का क्रांतिकारी विचार पहले से ही कई क्षेत्रों में कई कलाकारों द्वारा तेजी से अपनाया जा रहा है। इनमें मूर्तिकार, कलाकार, चित्रकार, लेखक, डिज़ाइनर, कांच और मिट्टी के बर्तन बनाने वाले कारीगर, बुनकर, वास्तुकार और बहुत कुछ शामिल हैं।

कल्पनाशील परिणाम प्राप्त करने के लिए घटकों के साथ अन्वेषण के विविध स्तर प्रदान करता है। इंटरैक्टिव मल्टीमीडिया तत्वों, इंस्टॉलेशन और 2 डी (2 आयामी), 3 डी या 4 आयामी अनुमानों के साथ-साथ आभासी वास्तविकता (वर्चुअल) (वीयू) या संवर्धित वास्तविकता (एयू) जैसी अत्याधुनिक अवधारणाओं के माध्यम से प्रौद्योगिकी की मदद से कला की उत्कृष्ट कृतियों को बनाने और लोकप्रिय बनाने की अथाह गुंजाइश होती है।

कलात्मक परंपराएं बदलती रही हैं और बदलती रहेंगी क्योंकि रचनात्मकता निरंतर विकसित होने वाली घटना है। क्योंकि जब तक ये समय के साथ विकसित नहीं होंगी , वे समाप्ति की ओर बढ़ सकती हैं। डिजिटल एन्हांसमेंट तकनीक इनकी यात्रा को मानव जाति के साथ समन्वयित रखने में सहायक रही है, और इस तथ्य को शायद ही कोई अस्वीकार कर सकता है। फिर भी यहां की परंपराओं के प्रति समर्पित प्रेमियों के लिए यह चिंता का विषय है।

एक पारंपरिक कला रूप प्रामाणिकता और शिल्प कौशल का प्रतीक है जो सदियों से पूजनीय रहा है। एक शिल्पकार द्वारा इसमें डाला गया कौशल, समर्पण और व्यक्तित्व का तत्व और मानवीय स्पर्श या मानवीय हाथ से उत्पन्न होने वाली खामियां और सूक्ष्मताएं कालातीतता की भावना पैदा करती हैं। इस तरह की घटना का सौंदर्यशास्त्र क्षेत्रीय सीमाओं और सदियों के समय के दायरे को पार करते हुए, युगों-युगों तक मानव हृदय में गूंजता रहता है। मानव सृजन का यह कभी न मरने वाला सार है, जो उभरने की तैयारी कर रही पीढ़ियों में नया जीवन फूंकता है।

इलेक्ट्रॉनिक कलात्मकता के लिए मशीन-निर्मित उपकरणों को स्वीकार करना इस क्षेत्र के विशेषज्ञों द्वारा हमेशा स्वागत योग्य नहीं होता है। कारण कई अलग-अलग हो सकते हैं - सदियों पुरानी मान्यताएं, पारंपरिक स्वभाव, ज्ञान या तकनीकी जानकारी की कमी या क्षेत्र की अवधि या शिक्षा से संबंधित अन्य बाधाएं। लेकिन उनके अपने आप में एक संस्था होने के बारे में शायद ही कोई संदेह हो सकता है - उन्मत्त शहरों से दूर, दुनिया के किसी शांतिपूर्ण कोने में बसे वे हमारे कुछ अमूल्य कला रूपों के अमूल्य संरक्षक हैं। बिना किसी संदेह के, वे ऐसा करना जारी रखेंगे, चाहे तकनीक उनसे कितनी भी आगे क्यों न बढ़ जाए।

इसलिए मानव के हाथ से प्रौद्योगिकी के छीनने का कोई सवाल ही नहीं है। लेकिन उपलब्ध समर्थन को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है और न ही किया जाना चाहिए। कलात्मक कल्पना के साथ प्रौद्योगिकी का विलय एक स्पर्शनीय और भावनात्मक पहलू हो सकता है जिसे निश्चित रूप से और अधिक खोजा जा सकता है।

इसके बाद, जब कला रूपों के प्रदर्शन की बात आती है तो जांच की जाने वाली एक और परत होती है। प्रदर्शन कलाओं की मूर्तता सदैव विशिष्ट है और रहेगी। प्रदर्शन की

महारथ जो भौतिक रूप से प्रदर्शित होती है, दर्शकों द्वारा उतनी ही खूबसूरती से आत्मसात की जाती है - जैसे कि साकार से परे एक उदात्त क्रिया। इस प्रभाव को सांसारिक, भौतिक जुड़ाव के माध्यम से बढ़ाया जाता है जिससे कलाकार दर्शकों के साथ स्थापित करने में सक्षम होता है। यहां डिजिटलीकरण बाहरी भूमिका से परे अनुपयुक्त लगता है परंतु उनके प्रतिस्पर्धात्मक रूप से बने रहने के लिए अपेक्षित प्रचार उपकरण प्रदान करता है।

इस संदर्भ में, इलेक्ट्रॉनिक प्रौद्योगिकी की सहायक भूमिका की बात करते हुए, कोई भी, एक बहुत ही महत्वपूर्ण बिंदु को छोड़ नहीं सकता है। इंटरनेट न केवल प्रदर्शन के लिए बेहतर पहुंच और जागरूकता पैदा करने के लिए कई रास्ते प्रदान करता है, बल्कि यह हमें कला-कलाकार-दर्शक तिकड़ी को करीब लाने के लिए उच्च तकनीक उपकरण भी प्रदान करता है। सोशल मीडिया और अन्य साइबर प्लेटफार्मों के माध्यम से कलात्मक प्रदर्शन को लोकप्रिय बनाने में मदद करके डिजिटल दुनिया ढेर सारे अभियान पेश करती है जो बढ़ी हुई रुचि और बेहतर प्रतिक्रिया पैदा करने में मदद कर सकते हैं। यह सिर्फ कलाकारों या दर्शकों के लिए एक विकल्प नहीं है, बल्कि यह बड़े पैमाने पर किसी भी कलात्मक-समाज की अपरिहार्य आवश्यकता के रूप में उभरा है।

प्रदर्शन कला रूपों को बढ़ावा देने में डिजिटल मीडिया की भूमिका काफी चमत्कारी रही है। समर्पित डिजिटल मीडिया अभियानों के माध्यम से बहुत सारे डर्बल या मरते हुए कला रूपों में पुनरुत्थान को देखा गया है। लंबे समय से खोए हुए कई कलाकार सोशल मीडिया नेटवर्क के माध्यम से खोज करने वाले प्रतिबद्ध अनुयायियों के उत्साही प्रयासों से गुमनामी से फिर से उभरे हैं। बहुत सारी सोई हुई कला-तकनीकों को उत्साही लोगों द्वारा पुनर्जीवित किया गया है जो 'इसे हमेशा के लिए खो जाने देने' के लिए तैयार नहीं हैं। जिस विरासत को हम खो सकते थे, कभी दोबारा हासिल नहीं कर सकते थे, उसे निश्चित रूप से इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की राहत देने वाली शाखा के माध्यम से बहाल कर दिया गया है।

निस्संदेह व्यापक मानव कनेक्टिविटी प्राप्त करने के ऐसे शानदार वरदान हैं जो डिजिटल दुनिया द्वारा प्रदान किए जा रहे हैं। अब प्रति-प्रभावों पर एक त्वरित नज़र, तकनीकी प्रगति ने कुछ एलकेमिस्ट को इस माध्यम से विवादास्पद और अकलात्मक मुद्दों पर अपने बयान देने की अनुमति भी दे दी है। ऐसा किसी फ़िल्टर के अभाव के कारण हो रहा है जो कलात्मक शैली के साथ गैर-कलात्मक प्रयोग को रोक सकता है। यहां कोई भी दृढ़ता से यह महसूस नहीं कर सकता है कि डिजिटल प्रौद्योगिकी की उत्पादक भूमिका होने की बजाय सहायक भूमिका निर्दिष्ट करने की आवश्यकता है।

इस प्रकार संकेतों को समझते हुए, एक मिश्रित दृष्टिकोण रखना ही समाधान नजर आता है जिसमें मानव रचनात्मकता अपने मूल स्थान पर अपरिवर्तनीय रूप से बनी रहती है, जबकि इसके बढ़ते प्रभावों को डिजिटल कामकाज के माध्यम से प्रोत्साहित (सप्पलिकेट) किया जा सकता है।

डिजिटलीकरण के प्रभावों का उपयोग संवर्धन के लिए किया जाना चाहिए, सृजन के लिए नहीं। ❑

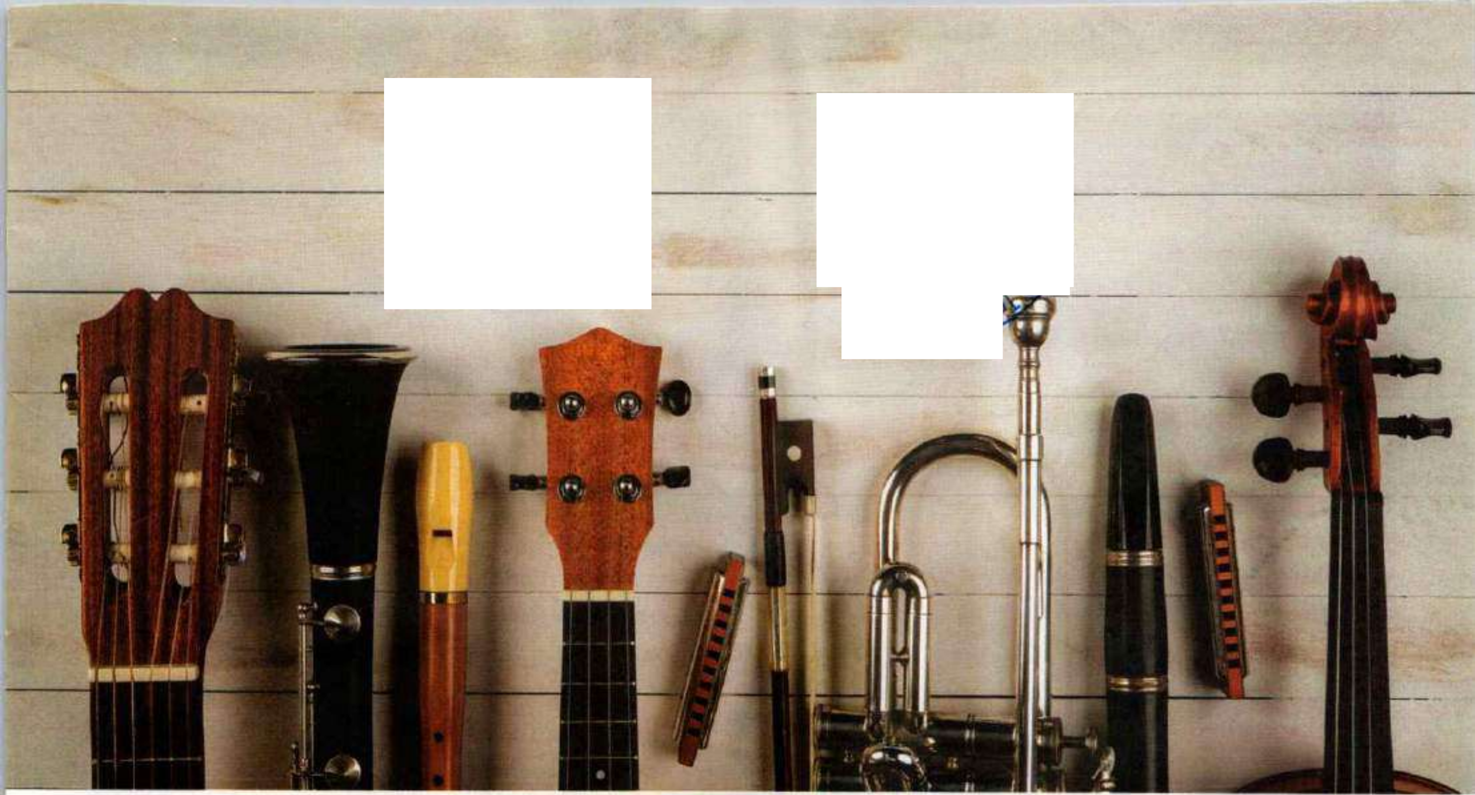

# भारत में लोकप्रिय संगीत

**डॉ कस्तूरी पायगुडे** | शास्त्रीय गायिका और लेखिका। ईमेल: paigudekasturi@gmail.com

**लोकप्रिय संगीत, संगीत का सरल एवं सहज रूप है इसलिए इसे जनता द्वारा अधिक सराहा जा सकता है। प्रति खंड की समयावधि कुछ मिनटों तक सीमित है जिससे आम दर्शकों के लिए इसे सुनना आसान हो जाता है। लोकप्रिय संगीत विविधतापूर्ण है और इसके अंतर्गत कई विधाएं हैं। यह व्याकरण, ढांचे, नियमों और विनियमों से बंधा नहीं है। यह संगीत के सृजन पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है जो मनभावन और मनोरंजक है और समानांतर रूप से दर्शकों को एक निश्चित संदेश देता है।**

लोकप्रिय संगीत एक ऐसी शैली है जो हाल ही में पारंपरिक संगीत से उभरी है। यह एक प्रकार का संगीत है जो जनमानस की इंद्रियों को आनंदित करता है। यह पूरी तरह से नियमों से रहित नहीं है, हालांकि लोकप्रिय संगीत में ये नियम शास्त्रीय संगीत की तुलना में कम कठोर हैं। यह पारंपरिक संगीत से बहुत अलग लगता है फिर भी इसकी जड़ें उस परंपरा में हैं जहां से इसका विकास हुआ है। इसके अस्तित्व का प्रमुख कारण वर्तमान संगीत में 'नवीनता' की आवश्यकता है। संगीत की 'ताज़गी' या 'नयापन' लोकप्रिय संगीत का एक महत्वपूर्ण तत्व है क्योंकि इसका उद्देश्य जनता को संतुष्ट करना है। लोकप्रिय संगीत धुन के साथ-साथ शब्दों को भी महत्व देता है, यह मनभावन और मनोरंजक होता है और इसलिए अमूर्त कला से कोसों दूर होता है। लोकप्रिय संगीत के कुछ परिचित रूप जो वर्तमान में गाए जाते हैं, इस प्रकार हैं:-

### नाट्यसंगीत

लोकप्रिय संगीत विविधतापूर्ण होता है। इसके अन्तर्गत शास्त्रीय संगीत, फिल्म संगीत, बैंड संगीत, भावसंगीत[2], अभंग[3], भजन[4] और भक्तिगीत[5] जैसे कई रूप हैं। भारत में राजशाही समाप्त हो गई और शास्त्रीय संगीत और संगीतकारों को कोई संरक्षण नहीं मिला। संगीत और संगीतकार दोनों ही अपनी आजीविका के लिए पूरी तरह से लोगों पर निर्भर हो गए। लोगों पर इसकी निर्भरता के परिणामस्वरूप जनता को आकर्षित करने

के लिए संगीत के प्रारूप में बदलाव आया। प्रशंसा और मनोरंजन के लिए एक संपूर्ण ख्याल प्रस्तुति को छोटी-छोटी रचनाओं में समेटा गया। इन रचनाओं को रंगमंच के एक हिस्से के रूप में प्रस्तुत किया गया और इसलिए इन्हें रंगमंच संगीत कहा गया। रंगमंच के संगीत को नाट्यसंगीत[1] कहा जाता था, गीतों को नाट्यगीत[6] कहा जाता था और इन गीतों के साथ रंगमंच के रूप को संगीत नाटक[7] कहा जाता था। नाट्यगीत मराठी पाठ के साथ रागों पर आधारित गीत थे। नाट्यगीतों को आलापों और संक्षिप्त, द्रुत तानों से अलंकृत किया जाता था। संगीत नाटक युग के दौरान ताल 'गंधर्व ठेका'[8] एक नई ताल आविष्कार की गई थी जिसका उपयोग विशेष रूप से नाट्यसंगीत की संगत के लिए किया जाता था। नवीन अलंकरणों, धुनों, समृद्ध साहित्य और गायन की गुणवत्ता के कारण नाट्यसंगीत एक लोकप्रिय विधा बन गई। इसकी लोकप्रियता तब चरम पर पहुंच गई जब दर्शकों ने संगीत नाटकों के अनुभवों का बार-बार आनंद लिया। कुछ गानों को बार-बार गाने का अनुरोध किया गया। विष्णुदास भावे का नाटक 'संगीत स्वयंवर'[9] 1843 में सांगली में मंचित होने वाला पहला संगीत नाटक था। बाद में कई संगीत नाटक अन्नासाहेब किर्लोस्कर, गोविंद बल्लाल देवल, वसंत कानितकर और विद्याधर गोखले द्वारा लिखे गए। 'नहीं मी बोलता', 'खरा तो प्रेमा', 'नरवर कृष्ण समान' जैसे गाने बहुत लोकप्रिय नाट्यगीतों में से कुछ गीत हैं।

समय के साथ-साथ गानों की लोकप्रियता बढ़ती गई और दर्शक, नाटकों के दौरान बार-बार गाने की फरमाइश करते रहे। परिणामस्वरूप, संगीत नाटक के नाटकीय पहलू की तुलना में यह संगीत समृद्ध और लोकप्रिय हो गया। भास्करबुवा बाखले, गोविंदराव टेम्बे, अहमदजान थिरकवा और बाल गंधर्व जैसे महान उस्तादों ने नाट्यसंगीत में मौलिक योगदान दिया। वे मिलकर नाट्यसंगीत के स्वर्ण युग का निर्माण कर सकते थे। थिएटर संगीत या नाट्यसंगीत उस समय लोकप्रिय संगीत था, हालांकि आज इसे पारंपरिक संगीत के रूप में जाना जाता है।

### फ़िल्म संगीत

भारत में फिल्म संगीत लोकप्रिय संगीत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और यह अपने आप में ही एक अलग तरह का संगीत है। पश्चिमी फिल्मों के विपरीत, भारतीय सिनेमा में बड़े पैमाने पर गाने होते हैं जो इसका एक अभिन्न अंग हैं। भारतीय सिनेमा के शुरुआती वर्षों में, गाने मुख्य रूप से कहानी को आगे बढ़ाने का हिस्सा हुआ करते थे। कहानी में गाने का उपयोग करने का विचार संगीत नाटक के कारण अस्तित्व में आया। वर्ष 1920 के दशक में पश्चिम से भारत में रिकॉर्डिंग तकनीक आने के बाद संगीत क्षेत्र में फिल्म संगीत का विकास हुआ। इसने भारत में संगीत बनाने के तरीके को बदल दिया। फिल्म, प्रभावित करने और जनता तक पहुंचने का एक बहुत ही प्रभावशाली माध्यम है और ऐसा ही इसका संगीत भी है। शब्दों को काफी महत्व दिया जाता है। फिल्म संगीत के शुरुआती दौर में शास्त्रीय रागों पर आधारित गाने हुआ करते थे। फ़िल्मों के कई गानों में बंदिशों को गाने के तौर पर इस्तेमाल किया जाता था। उदाहरण के लिए, फिल्म 'चित्रलेखा' में लता

मंगेशकर द्वारा गाया गया गीत 'एरी जाने ना दूंगी', सदारंग द्वारा 'राग कामोद' में एक बंदिश है, जिसे पंडित विष्णु नारायण भातखंडे ने भी संकलित किया है। राग अहीर भैरव में बंदिश 'अलबेला सजन आयो रे' को 1970 के दशक में सुल्तान खान ने गाया और लोकप्रिय बनाया। बाद में उन्होंने इसे शंकर महादेवन और कविता कृष्णमूर्ति के साथ गाया और एक फिल्म में इसका उपयोग किया। कई गायकों द्वारा गाए गए इस गाने को निर्देशक संजय लीला भंसाली ने 2015 में फिल्म बाजीराव मस्तानी में दोबारा इस्तेमाल किया था।

1980 के दशक में, ध्वनि प्रौद्योगिकी में आई प्रगति ने आरडी बर्मन और बाद में संगीत निर्देशक के रूप में एआर रहमान के फिल्म संगीत में योगदान के साथ फिल्मों में संगीत को महत्वपूर्ण रूप से बदल दिया। उनकी रचना शैलियों में इलेक्ट्रॉनिक ध्वनियों की प्रचुर मात्रा में उपयोग की मांग बढ़ी। ध्वनि रिकॉर्डिंग के शुरुआती युग में की जाने वाली सिंगल-ट्रैक रिकॉर्डिंग मल्टी ट्रैक रिकॉर्डिंग में बदल गई जो 'नए युग के संगीत' या लोकप्रिय संगीत के लिए बेहद अनुकूल है। मल्टी-ट्रैक रिकॉर्डिंग में त्रुटियों की संभावना कम होती है साथ ही यह एक समय में एक ट्रैक को रिकॉर्ड करने की स्वतंत्रता देता है और ध्वनियों में विविधता को सक्षम बनाता है। सिंगल-ट्रैक रिकॉर्डिंग काफी हद तक प्रतिभाशाली संगीतकारों, गायकों और व्यवस्थापकों पर निर्भर थी। प्रतिभाशाली संगीतकारों, गायकों और व्यवस्थापकों के साथ-साथ मल्टी-ट्रैक रिकॉर्डिंग प्रणाली काफी हद तक स्टूडियो इंजीनियरों और प्रोग्रामरों पर निर्भर है। ये कारक, अच्छी गुणवत्ता का लोकप्रिय संगीत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मौजूदा समय में भी फिल्मों में गाने कहानी का हिस्सा होते हैं।

## बैंड संगीत

भारत में बैंड संगीत ने 1980 के दशक में आकार लेना शुरू किया और 1990 के दशक तक पूरी तरह से स्थापित हो गया। 'इंडियन ओशियन' भारत के अग्रणी और बहुत लोकप्रिय बैंड में से एक था। इसका जन्म नया संगीत बनाने की आवश्यकता से हुआ जब संगीतकार मित्रों के एक छोटे समूह ने मिलकर अपनी पहली रचना तैयार की। 'इंडियन ओशियन' ने कबीर द्वारा लिखित ग्रंथों को चुना और अपना संगीत स्वयं तैयार किया। तथ्य यह है कि सदियों पुराने कबीर ग्रंथ आज भी इतने प्रासंगिक हैं कि इंडियन ओशियन जैसा लोकप्रिय बैंड भी नए ग्रंथ लिखने के बजाय इन ग्रंथों को चुनता है। कारण यह है कि कबीर इन टेक्स्ट के माध्यम से जो संदेश देते हैं वह कालातीत हैं और उनका दर्शकों पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। धीरे-धीरे बैंड संगीत अपने आप में लोकप्रिय संगीत की एक महत्वपूर्ण शैली बन गया और अग्नि, स्वरात्मा, परिक्रमा और द लोकल ट्रेन जैसे कुछ और लोकप्रिय बैंड बने। हालांकि इसमें कबीर के टेक्स्ट हैं, लेकिन इसकी प्रस्तुति भारतीय संगीत समारोह की पारंपरिक व्यवस्था से बहुत अलग है। कलाकारों का समूह खड़े होकर या बैठकर अपना संगीत प्रस्तुत करता है। प्रदर्शन करते समय डोलना और कैज़ुअल कपड़े पहनना इन समूहों की कुछ खासियतें हैं। बैंड संगीत में, औसतन प्रत्येक कलाकार को प्रदर्शन के लिए समान समय मिलता है। प्रस्तुति का कुछ हिस्सा एक साथ प्रदर्शन करना है जबकि प्रस्तुति का कुछ हिस्सा वह है जब कलाकार एकल प्रदर्शन करते हैं। बैंड संगीत में कोई एक कलाकार मुख्य कलाकार नहीं होता। बैंड संगीत में पूरा समूह ही मायने रखता है। लोकप्रिय संगीत व्याकरण, ढांचे, नियमों और विनियमों में बंधा नहीं है। यह संगीत सृजन पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है जो मनभावन और मनोरंजक है और समानांतर रूप से दर्शकों को एक निश्चित संदेश देता है।

## क्षेत्रीय लोकप्रिय संगीत

भावसंगीत या भावगीत भारत की सभी क्षेत्रीय भाषाओं में गाए जाते हैं। इन्हें सुगम संगीत भी कहा जाता है। संगीत के इस रूप में आवाज का प्रयोग शायद ही कभी पूरे कंठ से होता हो जिसमें शब्दों और भावनाओं का अत्यधिक महत्व महसूस होता है। गाने की पूरी संरचना बहुत ही मधुर है और इसमें लय की विभिन्न पद्धतियों का उपयोग किया जाता है। भावसंगीत में सामंजस्य एवं प्रतिवाद का प्रयोग, अभंग, भजन या भक्तिगीत इसे अलग

बनाते हैं। गीत भगवान की भक्ति या स्तुति में गाए जाते हैं। अभंग संतों द्वारा लिखे गए हैं जबकि भजन और भक्तिगीत कवियों द्वारा लिखे गए हैं।

संगीत का सरल रूप होने के कारण लोकप्रिय संगीत को जनता द्वारा अधिक सराहा जा सकता है। प्रत्येक खंड की समय अवधि कुछ मिनटों तक सीमित है जिससे आम दर्शकों के लिए इसे बैठकर सुनना आसान हो जाता है। प्रत्येक प्रकार के संगीत की एक निश्चित भूमिका होती है। ध्रुपद और ख्याल संगीत के गंभीर रूप हैं और मनोरंजन के लिए नहीं हैं। लोकप्रिय संगीत, संगीत का एक सरल रूप है जो मनोरंजन पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है। संगीत के ये सभी रूप रत्नों की तरह हैं जो संगीत की पूरी दुनिया को विशाल, विविध और समृद्ध बनाते हैं।

### शब्दकोष

1. **नाट्यसंगीत**- नाट्य संगीत या नाटकीय संगीत के रूप में जाना जाता है। संगीत नाटकों में गाया जाने वाला भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक लोकप्रिय रूप है।
2. **भावसंगीत**- एक लोकप्रिय प्रकार का सुगम संगीत जो माधुर्य, बोल और भाव पर जोर देता है।
3. **अभंग**- एक लोकप्रिय प्रकार का सुगम शास्त्रीय संगीत। टेक्स्ट संतों द्वारा लिखे गए हैं जिनमें अक्सर एक कालातीत संदेश होता है।
4. **भजन**- भगवान की स्तुति में गाए जाने वाले भक्तिपूर्ण हल्के शास्त्रीय गीत या भजन।
5. **भक्तिगीत**- भक्तिमय सुगम संगीत गीत।
6. **नाट्यगीत**- संगीत नाटकों के लोकप्रिय अर्ध शास्त्रीय गीत।
7. **संगीत नाटक**- अर्ध शास्त्रीय गीतों के साथ एक संगीत नाटक।
8. **गंधर्व ठेका**- तबले पर बजाया जाने वाला एक लय चक्र जो विशेष रूप से नाट्य संगीत के लिए होता है।
9. **संगीत स्वयंवर**- विष्णुदास भावे का पहला संगीत नाटक।
10. **बंदिशें**- सुर, लय और शब्दों के साथ एक भारतीय शास्त्रीय संगीत रचना।
11. **कबीर**- पन्द्रहवीं शताब्दी के प्रसिद्ध संत।
12. **भावगीते**- हल्के संगीत वाले गीत जिनमें माधुर्य, बोल और भाव पर जोर दिया जाता है। ❑


## कृपया ध्यान दें

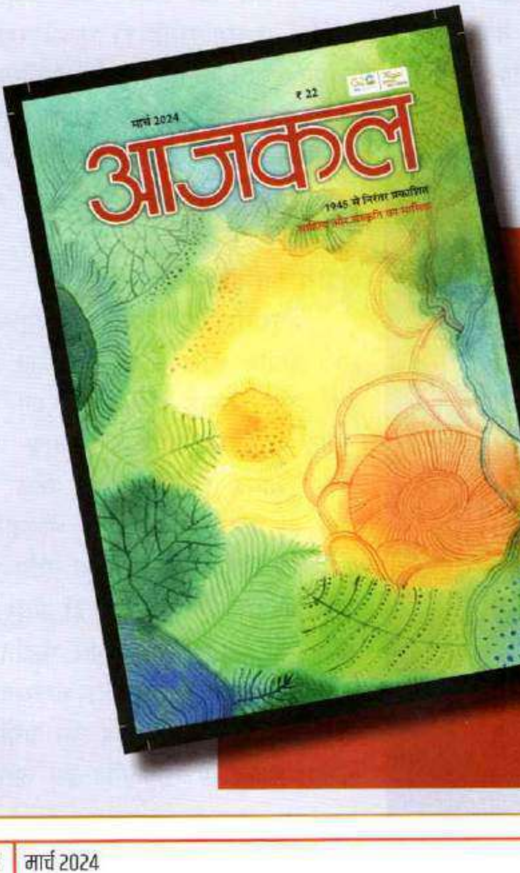


**मार्च 2024 अंक अब उपलब्ध...**
**साहित्य जगत की रोचक सामग्री के साथ...**

आज ही पुस्तक विक्रेता से आजकल ( हिन्दी ) खरीदें। सदस्य बनने के लिए क्यू आर कोड स्कैन करें।

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

# ई-रिसोर्स एग्रीगेटर (ईआरए)
## के एम्पैनलमेंट के लिए आवेदन आमंत्रित

**सरकार के प्रतिष्ठित प्रकाशन संस्थान से जुड़ने और उसके ई-प्रकाशनों के विक्रय का सुनहरा अवसर**

### प्रमुख लाभ :-

- प्रकाशन विभाग की लोकप्रिय ई-पुस्तकें और ई-पत्रिकाएं उपलब्ध कराने का अवसर।
- प्राप्त राजस्व में 30% की निश्चित हिस्सेदारी।
- किसी निवेश की आवश्यकता नहीं।
- मात्र 2000 रुपये का पंजीकरण शुल्क।

अधिक जानकारी के लिए देखें –
www.publicationsdivision.nic.in

संपर्क करें
फोन : 011 24365609
ईमेल : businesswng@gmail.com
पता : व्यापार स्कंध, कमरा संख्या–758, सूचना भवन, लोधी रोड, नई दिल्ली–110003

# आधुनिक तकनीकों और संदर्भों के जरिये लोक कला की पुनर्कल्पना

**डॉ प्रांशु समदर्शी** | सहायक प्रोफेसर, नालंदा विश्वविद्यालय। 2009 से 2011 तक स्पिक मैके के राष्ट्रीय सचिव
ईमेल: pranshu@gmail.com

**भरत मुनि के नाट्य शास्त्र के रस सिद्धांत से प्रेरणा लेते हुए हम इस बात पर विचार कर सकते हैं कि कला चाहे वह दृश्य हो या प्रदर्शन, लोक हो या शास्त्रीय केवल सौंदर्य की दृष्टि से आकर्षक चीजों को गढ़ने या उनकी सराहना करने से ही संबंधित नहीं है। यह हमारी अन्तरात्मा से गहन रूप से जुड़ने और अवर्णनीय को व्यक्त करने का एक साधन है।**

समकालीन समय में डिजिटलीकरण हमारे जीवन के हर पहलू में क्रांतिकारी परिवर्तन ला रहा है। कृत्रिम मेधा की शुरुआत के साथ पारंपरिक तरीके अप्रत्याशित तरीके से बदल रहे हैं। इसके अलावा जो लोग पुराने ढर्रे के साधनों का उपयोग करके पारंपरिक तरीके से काम कर रहे हैं उन पर इस परिवर्तन को अपनाने और इसके अनुरूप ढलने का दबाव लगातार बढ़ रहा है। यह चलन समकालीन भारतीय लोक कला के क्षेत्र तक में प्रवेश कर गया है जो आधुनिक तकनीकी प्रगति को अपनाने के लिए बढ़ते दबाव का सामना कर रहा है।

स्मार्ट प्रौद्योगिकी को समेकित करके लोक कला शैलियों को विकसित होने और भौगोलिक और सांस्कृतिक सीमाओं को लांघ कर डिजिटल प्रसार के माध्यम से अधिक दर्शकों तक पहुंचने का अवसर मिलना जरूरी है। फिर भी विकसित होती प्रौद्योगिकी के माहौल में इन परंपराओं के अंतर्भूत सार को संरक्षित करना एक महत्वपूर्ण चुनौती से कम नहीं है। ये कला शैलियां अपनी वास्तविकता बनाए रखें इसे सुनिश्चित करने के लिए एक कार्यप्रणाली खोजना महत्वपूर्ण है। चुनौतीपूर्ण है एक सुविचारित व्यावहारिक समाधान तैयार करना जिसमें ये कला शैलियां अपने अंतर्भूत सांस्कृतिक महत्व को बरकरार

रखते हुए परिवर्तन की तीव्र गति के साथ मेल बिठा सकें और फल फूल सकें।

## सांस्कृतिक पहचान का संरक्षण और परिवर्तन के अनुरूप ढलना

लोक कला शैलियां अधिकतर प्रासंगिक प्रकृति की होती हैं। वे समुदायों की सांस्कृतिक विशिष्टताओं में गहराई से पैठी होती हैं और अनूठे रीति-रिवाजों को संरक्षित करने व सांप्रदायिक समन्वय को बढ़ावा देने के लिए एक माध्यम के रूप में काम करती हैं। ये कला शैलियां जिनकी अभिव्यक्ति चाहे संगीत, नृत्य, या दृश्य विधाओं के माध्यम से की गयी हो समुदायों और भौगोलिक क्षेत्रों की सांस्कृतिक पहचान को एक विशेष रूप में ढालने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वे उनकी सामूहिक चेतना और ऐतिहासिक विरासत को अभिव्यक्त करने के साधन के रूप में कार्य करती हैं। लोक कला शैलियों की निरंतरता के लिए सामुदायिक सहभागिता महत्वपूर्ण है।

शास्त्रीय कला रूपों के विपरीत लोक कलाओं की गतिशील और अनुकूलनीय प्रवृत्ति होती है जो अक्सर समकालीन प्रभावों और रुझानों से प्रभावित होती है। यह देखा जा रहा है कि कई लोक-कला शैलियां अब अपने स्थानीय दायरों तक सीमित नहीं हैं। वैश्वीकरण की प्रक्रिया से उन पर अंतर-सांस्कृतिक प्रभावों का मार्ग प्रशस्त हुआ है। लोक परंपराएं धीरे-धीरे अपनी जड़ों या उन सांस्कृतिक संदर्भों से हट रही हैं जिनसे उनकी मूल उत्पत्ति हुई है। उन्हें व्यापक मंच मिल रहे हैं और वे समसामयिक विषयों और तकनीकों को अपने में समाहित कर रही हैं। तत्वों के इस तरह के मिश्रण ने एक ओर जहां इन प्रथाओं को पुनर्जीवित किया है जिससे वे समकालीन दर्शक वर्ग के लिए प्रासंगिक बन गए हैं वहीं दूसरी ओर इन आयामों को शामिल करने से इन कला शैलियों के मूल सार में परिवर्तन आने और उनके कमजोर पड़ने का खतरा भी पैदा हो गया है।

## पारंपरिक प्रदर्शन कलाओं की रूपांतरण सामर्थ्य

पारंपरिक प्रदर्शन कला के क्षेत्र में सजीव शारीरिक प्रदर्शन लंबे समय से कलात्मक अनुभव का अभिन्न अंग रहा है जो कलाकार और दर्शकों के बीच संबंध को एक समृद्ध आयाम प्रदान करता है। लेकिन जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी विकसित होती जा रही है और आभासी माध्यमों के जरिये से प्रदर्शन कला अदायगी में बढ़ोतरी हो रही है पारंपरिक कला के दिग्गजों में इस बात को लेकर चिंता बढ़ रही है कि क्या आभासी माध्यमों के जरिए कला प्रदर्शन उन सूक्ष्म अभिव्यक्तियों को पर्याप्त रूप से उजागर कर सकता है जिनको भौतिक रूप से महसूस किए जाने की अपेक्षा की जाती है।

जब किसी प्रतिष्ठित कलाकार के कला प्रदर्शन में मौजूद रहकर उसका आनंद उठाया जाता है तब कला शैलियों में दर्शकों की चेतना को एक ऐसे स्तर पर ले जाने की सामर्थ्य की अनुभूति का अहसास होता है जो उन्हें अपनी अन्तरात्मा से जोड़ने की दिशा में एक परिवर्तनकारी यात्रा का मार्गदर्शन करती हैं। यहीं कला की भूमिका विकसित होती है। यह सिर्फ अपने दर्शकों के मनोरंजन का साधन नहीं है। यह उनमें विस्मय की भावना का संचार करने और उनकी चेतना को नयी ऊंचाइयों तक ले जाने का एक शक्तिशाली माध्यम बन जाता है। इस प्रकार कला शैलियों का एक दार्शनिक और आध्यात्मिक आयाम प्रकट होता है। इनकी विकास यात्रा ऐतिहासिक है और उन्होंने सतत रूप से मानव चेतना के नए आयामों को प्रकट करना जारी रखा है।

भरत मुनि के नाट्य शास्त्र के रस सिद्धांत से प्रेरणा लेते हुए हम इस बात पर विचार कर सकते हैं कि कला चाहे वह दृश्य हो या प्रदर्शन, लोक हो या शास्त्रीय केवल सौंदर्य की दृष्टि से आकर्षक चीजों को गढ़ने या उनकी सराहना करने से ही सम्बंधित नहीं है। यह हमारी अन्तरात्मा से गहन रूप से जुड़ने और अवर्णनीय को व्यक्त करने का एक साधन है।

कला उस क्षेत्र में कदम रखने के बारे में है जिसे स्पिक मैके के संस्थापक प्रोफेसर किरण सेठ 'अल्फा डोमेन' कहते हैं जहां कला का आत्मा से मिलन होता है जो इन कला शैलियों की वास्तविक शक्ति और उद्देश्य है। प्रोफेसर सेठ के शब्दों में, "प्रदर्शन करते समय यदि कलाकार वास्तव में 'अनुभूति के उच्च स्तर' पर होते हैं तो वे लंबे समय तक अपने दर्शकों को प्रभावित करते हैं।'' इस तरह ये कला शैलियां अपने दर्शकों के अंतर्मन को प्रभावित करने की क्षमता प्रदर्शित करती हैं और उन पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ती हैं जो प्रदर्शन के समापन के बाद भी अपनी छाप बनाये रखता है और यह अनुभव गहन संतुष्टि प्रदान करता है।

## संरक्षण के लिए डिजिटल आयाम में परिवर्तन के सरोकार

आधुनिक युग में प्रस्तुति के लिए लोक कला और संगीत डिजिटल क्षेत्र की ओर अग्रसर हो रहे हैं। यह कदम इन कलाओं को अपनी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने का अवसर प्रदान करता है और वे दर्शकों के व्यापक वर्ग तक पहुंच बना सकते हैं खासकर युवा पीढ़ी के बीच। विकास की यह यात्रा पहुंच में सुगमता और वैश्विक कनेक्टिविटी की ओर डिजिटल युग के झुकाव के अनुरूप है। हालांकि इस परिवर्तन यात्रा के दौरान पारंपरिक लोक कला शैलियों में निहित सूक्ष्म, अमूर्त और सहज तत्वों के कमजोर पड़ने की सम्भावना बारे में एक आशंका अवश्य है।

इस बदलाव और परिवर्तन की जटिलताओं के बारे में कुछ महत्वपूर्ण सरोकार हैं। कुछ संगीतशास्त्रियों ने लोक-कला शैलियों की शुद्धता और प्रामाणिकता को संरक्षित करने के महत्व पर जोर दिया है क्योंकि वे गहन मानवीय अभिव्यक्तियों को दर्शाते हैं। इन संगीतशास्त्रियों का तर्क है कि जहां प्रौद्योगिकी नवाचार और प्रसार के लिए अभूतपूर्व अवसर प्रदान कर रही है, वहीं यह कला को केवल कम्प्यूटेशनल अल्गोरिद्म या गैर-मानवीय इलेक्ट्रॉनिक संगीत क्षेत्र तक सीमित डिजिटल टेम्पलेट्स तक सीमित करने का जोखिम भी पैदा करती है। इसके अलावा इन कला शैलियों के लिए अल्गोरिद्म पूर्वाग्रह और बड़े पैमाने पर मानकीकरण का खतरा है, जो अनजाने में लोक परंपराओं की स्थानीय-विशिष्ट बारीकियों को मिटा सकता है। जारोन लानियर जैसे समकालीन विचारकों के अनुसार जैसे ही ये कला शैलियां

डिजिटल क्षेत्र में आती हैं उनके एकसारकृत, उत्पादिकरण या उनकी मूल गहनता और अर्थ से रहित सतही स्वरूप धारण करने का जोखिम पैदा हो जाता है।

हमें यह ध्यान में रखना होगा कि पारंपरिक लोक कला अपने भीतर इतिहास, प्रतीकवाद और सांस्कृतिक महत्व के तत्वों को समाहित किये हुए हैं। ऐसे तत्व आसानी से कंप्यूटर की बाइनरी भाषा या डिजिटल क्षेत्र के आभासी जगत में परिवर्तित नहीं हो सकते हैं। इन तत्वों की समग्रता को बनाए रखने के लिए नवाचार और संरक्षण के बीच एक नाजुक संतुलन की आवश्यकता होती है। इसलिए चुनौती यह सुनिश्चित करने में है कि डिजिटल अनुकूलन के बीच इन कला शैलियों का सार और मूलभूत तत्व कहीं लुप्त न हो जाए।

इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए लोक कला के डिजिटलीकरण को विविधता और विरासत से उसके संबंध के प्रति संवेदनशीलता और सम्मान के साथ अपनाना आवश्यक है। परंपरा की गहरी समझ रखने वाले आधुनिक प्रौद्योगिकीविदों और कलाकारों के बीच सहयोगात्मक प्रयासों से यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया जा सकता है कि डिजिटल रूप से अनुकूलित कृतियां उनके पारंपरिक समकक्षों की वास्तविकता और समृद्धि को बनाए रखें।

## निष्कर्ष

जैसे-जैसे हम लोक कला के डिजिटल क्षेत्र में परिवर्तन की ओर बढ़ रहे हैं हम उस दोराहे पर चुनौतियों का भी सामना कर रहे हैं जहां प्रौद्योगिकी और सांस्कृतिक विरासत एक दूसरे से मिलती हैं।

हमें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि डिजिटल रूप से अनुकूलित कृतियां इन कला शैलियों के सांस्कृतिक मूलाधारों और विरासत के प्रति सत्यनिष्ठ बनी रहें। नवाचार और संरक्षण के बीच एक सुविचारित संतुलन बनाकर हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि लोक कला शैलियां अपने सार को खोये बिना डिजिटल युग में फूले फलें। ❑

## सन्दर्भ


1. Lanier, J. (2010). You Are Not A Gadget. United Kingdom: Penguin Books Limited.
2. Educast, Pondicherry University. 2022. "An Exclusive Interview With Prof. Kiran Seth, Founder, SPIC MACAY." Accessed February 14, 2024. https://www.youtube.com/watch?v=cfOOtEkCFvc.

# प्रकाशन विभाग

# परीक्षा तैयारी

के लिए

## हमारा संग्रह

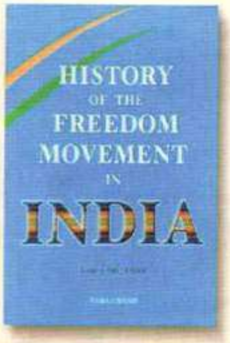


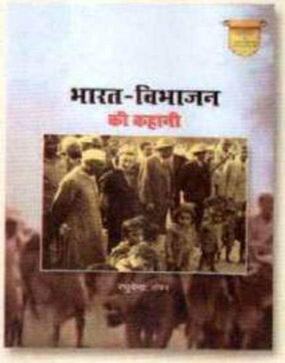


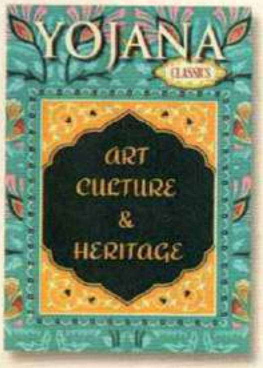


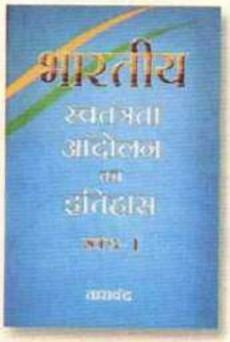


व अन्य कई ...

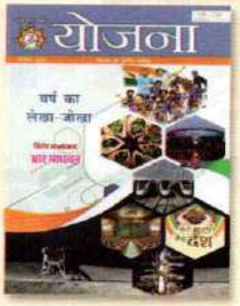


रोज़गार संबंधी जानकारी और महत्वपूर्ण समसामयिक विषयों पर गहन विश्लेषण के लिए हर सप्ताह पढ़ें **रोज़गार समाचार**

**सब्सक्राइब करें : www.employmentnews.gov.in**

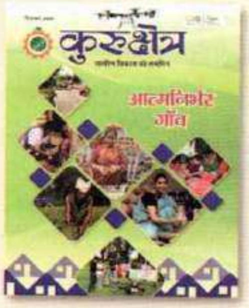


खरीदने के लिए : **www.publicationsdivision.nic.in**

संपर्क करें:

| | | | |
|---|---|---|---|
| पुस्तकों के लिए : | businesswng@gmail.com | | 01124365609 |
| पत्रिकाओं के लिए: | pdjucir@gmail.com | | 01124367453 |

सूचना भवन, सीजीओ काम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली - 110003

# 'बुद्धिमत्ता के साथ कला' से 'कृत्रिम मेधा' तक


**डॉ मनीष कर्मवार** | दिल्ली विश्वविद्यालय में इतिहास के सहायक प्रोफेसर। ईमेल: mkarmwar@as.du.ac.in

**आभाष के सौरव** | दिल्ली विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर। ईमेल: abhashkumarsaurav96@gmail.com



**जब से डिजिटल दुनिया अस्तित्व में आई है, जीवन का एक भी पहलू इससे अछूता नहीं रहा है। एआई यानी कृत्रिम मेधा और जेनरेटिव एआई यानी सृजनात्मक कृत्रिम मेधा जैसे डिजिटल युग के नवाचारों ने हमारे दैनिक जीवन में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। डिजिटल प्रौद्योगिकियों के इस नए युग में, कम प्रयास और अधिक सामर्थ्य के साथ कलात्मक अभिव्यक्ति अधिक आकर्षक और नवीन हो गई है।**

क ला और बुद्धि प्राचीन काल से ही एक- दूसरे से बंधे हुए हैं। प्राचीन काल में हमारे पास एआई यानी कृत्रिम मेधा नहीं थी, लेकिन हमारे पास उल्लेखनीय बुद्धिमत्ता वाली कला की प्रचुरता थी। प्रारंभिक मानव ने अपनी बुद्धि से ऐसी महत्वपूर्ण कला का विकास किया जिसमें पत्थर तथा हाथीदांत से बनी कला-कृतियां, मिट्टी के बर्तन, धातुकर्म, कपड़ा उत्पादन, मनके बनाना, काष्टकला तथा उत्कीर्णन, गाड़ी बनाना, गुफाओं में चित्रकारी करना आदि शामिल हैं। यदि कोई प्रौद्योगिकी को परिवर्तन के मानवीय तरीके के रूप में परिभाषित करता है, तो हमारे पास इसका प्रमाण भी है, ये हैं- दो मिलियन से अधिक वर्षों से भारतीय उपमहाद्वीप में मौजूद पत्थर के औजार। भारत में 2600 और 1900 ईसा पूर्व के बीच हुए पहले शहरीकरण के दौरान, हड़प्पा सभ्यता एक महत्वपूर्ण उदाहरण के रूप में उभरी। हड़प्पा सभ्यता में बुद्धि के साथ कला के बहुत सारे उदाहरण हैं। हड़प्पा सभ्यता के लोग नई कृषि प्रौद्योगिकियों का आविष्कार करने के लिए काफी उन्नत थे, इसलिए उन्होंने अंतरफसल का आविष्कार किया।

इसके अलावा, उन्होंने पहिये का आविष्कार किया जिसने आधुनिक काल तक मानव सभ्यता की मदद की है। धातु विज्ञान में, उन्होंने अयस्क से धातु निष्कर्षण के लिए नई तकनीकों का आविष्कार किया। इसके अलावा, उन्होंने मिश्र धातु तकनीक विकसित की, जिससे उन्होंने धातु टिन के साथ तांबे को मिश्रित करना और कांस्य का उत्पादन करना शुरू किया था। हड़प्पा के लोगों द्वारा विकसित की गई महत्वपूर्ण तकनीकों में से एक 'लॉस्ट वैक्स' तकनीक है। इस तकनीक की मदद से उन्होंने मूर्तियां बनाईं, जो कला और संस्कृति के क्षेत्र में एक मील का पत्थर थीं।

आज के डिजिटल युग में हालांकि हम वास्तुशिल्प नवाचार में बेहतर परिणामों के लिए एआई का उपयोग करते हैं। हड़प्पा के लोगों ने जल निकासी प्रणाली जैसे सभी आधुनिक पहलुओं के साथ उन्नत ग्रिड-आधारित नगर नियोजन विकसित किया। उन्होंने अधिक मजबूत दीवारें बनाने के लिए अनुपातिक रूप से ईंटों का उपयोग किया।

हड़प्पा काल के बाद दूसरा शहरीकरण गंगा घाटी में हुआ। इस दूसरे शहरीकरण काल में, लोहे पर आधारित कुछ उल्लेखनीय तकनीकी नवाचार हुए। दिल्ली लौह स्तंभ, जो 1500 वर्ष पुराना है, छह टन गढ़ा हुआ लोहा से बना है और लोहे में फॉस्फोरस का उपयोग हुआ है। इस प्रकार यह बुद्धि के साथ कला का और साथ ही उन्नत तकनीक का भी सच्चा उदाहरण है। यह लौह स्तंभ अपने जंग प्रतिरोधी गुणों के लिए प्रसिद्ध है। इसकी विशिष्टता के कारण को अब समझा जाने लगा है। इसी तकनीक का उपयोग ओडिशा के जगन्नाथ पुरी के मंदिरों में भी किया गया है। इसके अलावा, मध्यकाल में, यदि हम कला को बुद्धिमत्ता के साथ देखें, तो हमारे पास किले जैसे कई उदाहरण हैं, जो अपनी विशिष्टता में अद्वितीय हैं।

कला और संस्कृति समुदायों के विश्वास, मूल्यों, और परंपराओं को दर्शाते हुए पहचान की अभिव्यक्ति के रूप में कार्य करती हैं। संगीत, नृत्य, साहित्य और दृश्य कला जैसे कला रूपों के माध्यम से, व्यक्ति और समुदाय अपनी विशिष्ट पहचान और विरासत को व्यक्त करते हैं। कला विचार को प्रेरित कर सकती है, मानदंडों को चुनौती दे सकती है और कार्रवाई को प्रेरित कर सकती है। रचनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से, कलाकार सामाजिक मुद्दों को संबोधित करते हैं, न्याय की वकालत करते हैं और सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देते हैं। सांस्कृतिक गतिविधियों ने ऐतिहासिक रूप से सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

डिजिटल प्रौद्योगिकी के उदय ने डिजिटल पेंटिंग, ग्राफिक डिजाइन, एनीमेशन और इंटरैक्टिव मीडिया जैसे नए कला रूपों को जन्म दिया है। कलाकार आश्चर्यजनक दृश्य कलाकृतियां बनाने के लिए टैबलेट, सॉफ्टवेयर प्रोग्राम और डिजिटल कैमरे जैसे डिजिटल उपकरणों का उपयोग करते हैं जिन्हें पारंपरिक तरीकों से हासिल करना पहले असंभव या कठिन था। कोविड-19 महामारी ने कला और संस्कृति क्षेत्र को फिर से नया रूप दिया जिससे एआई जैसे उपकरण ज़्यादा प्रचलन में आए है। आज, हम आभासी कला संग्रहालयों, प्रदर्शनियों, आभासी संरक्षकों, थिएटरों और बहुत कुछ का तेजी से उद्भव देख रहे हैं। महामारी ने सांस्कृतिक संस्थानों और कार्यक्रमों के लिए आभासी प्रारूपों को व्यापक रूप से अपनाने के लिए उत्प्रेरक के रूप में काम किया। यह चुनौतीपूर्ण समय कला संस्थानों के लिए डिजिटल

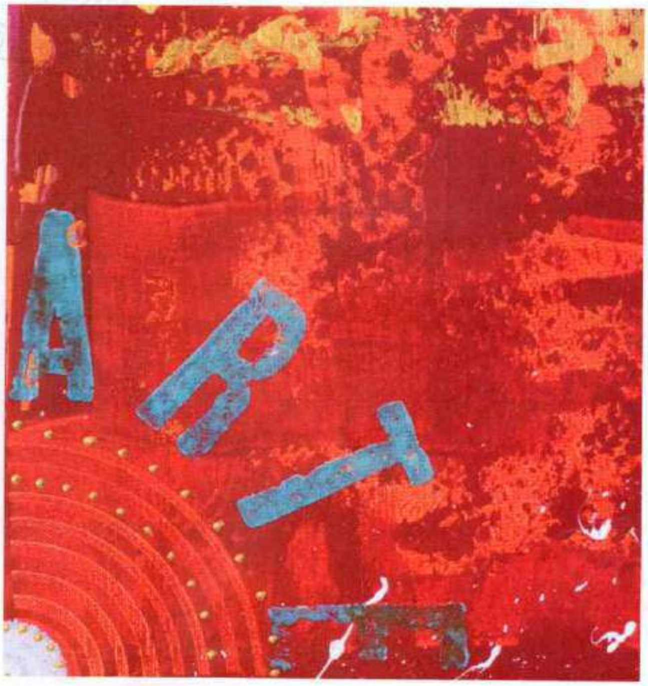

प्रौद्योगिकी के विकास में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ है।

वेबसाइटें, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, ऑनलाइन गैलरी और डिजिटल आर्ट मार्केटप्लेस कलाकारों को व्यापक दर्शकों तक पहुंचने, साथी रचनाकारों से जुड़ने और यहां तक कि अपनी कलाकृति सीधे संग्राहकों को बेचने की सुविधा प्रदान करते हैं। इसने हमें डिजिटल संरक्षण का महत्व दिखाया। डिजिटल संरक्षण तकनीकें, जैसे डिजिटीकरण, मेटाडाटा प्रबंधन और डिजिटल संग्रह, भविष्य की पीढ़ियों के लिए डिजिटल कलाकृतियों के दीर्घकालिक संरक्षण और पहुंच सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक हैं।

डिजिटल युग कलाकारों और कला प्रेमियों के लिए यद्यपि कई अवसर लेकर आया है, लेकिन यह कई चुनौतियां भी प्रस्तुत करता है। डिजिटल कला निर्माण के लिए डिजिटल टूल और सॉफ्टवेयर में दक्षता की आवश्यकता होती है, जो प्रशिक्षण या संसाधनों की कमी के कारण कलाकारों के लिए में बाधा उत्पन्न कर सकती है। डिजिटल कला के ऑनलाइन प्रसार से कलाकृतियों की गुणवत्ता और प्रामाणिकता को पहचानना मुश्किल हो जाता है, जिससे विश्वास और विश्वसनीयता के मुद्दे पैदा होते हैं। जैसे-जैसे डिजिटल हेरफेर तकनीकें तेजी से परिष्कृत होती जा रही हैं, मूल कलाकृतियों और डिजिटल जालसाजी या प्रतिकृतियों के बीच अंतर करना अधिक चुनौतीपूर्ण होता जा रहा है। प्राथमिक चिंताओं में से एक डाटा गोपनीयता है; व्यक्तिगत जानकारी एकत्र करना और संग्रहीत करना, वित्तीय लेनदेन करना और रचनात्मक सामग्री को ऑनलाइन साझा करना अंतर्निहित जोखिम रखता है जिसके लिए मजबूत साइबर सुरक्षा उपायों और डाटा सुरक्षा प्रोटोकॉल की आवश्यकता होती है।

कुल मिलाकर, डिजिटल युग ने कला की दुनिया को गहराई से बदल दिया है, जिससे रचनात्मकता, सहयोग और नवीनता के नए रास्ते खुल गए हैं। जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी का विकास जारी है, डिजिटल कला की संभावनाएं असीमित हैं, जो कला के बारे में हमारी समझ और समाज में इसके स्थान को नया आकार देने का वादा करती है।

डिजिटल कला, पारंपरिक कला की तरह, पिक्सेल से बनी होती है। पिछले 50 वर्षों में, जैसे-जैसे कंप्यूटर प्रौद्योगिकी उन्नत हुई है, वैसे-वैसे कला भी उन्नत हुई है। इंटरनेट प्रौद्योगिकी के उदय ने वैश्विक कला गतिविधियों को बढ़ने के लिए प्रेरित किया है। जब हम समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक मूल्यों को देखते हैं, तो हम पाते हैं कि कला और डिजिटल प्रौद्योगिकी के संयोजन ने कला के एक नए पुनर्जीवित रूप का निर्माण किया है जिसे 'डिजिटल कला' के रूप में जाना जाता है। समय के साथ कला की परिभाषा बदल गई है( यह अब केवल पेंटिंग, चित्र और मूर्तियों तक सीमित नहीं है। कला में अब कंप्यूटर-जनित छवियां और डिजाइन शामिल हैं, जो कला के अर्थ का विस्तार करते हैं। डिजिटल कला ने न केवल पेंटिंग, ग्राफिक डिजाइन, इंस्टॉलेशन और एनीमेशन को बदल दिया है बल्कि कविता, संगीत और मूर्तिकला को भी नए दृष्टिकोण दिए हैं। आधुनिक सॉफ्टवेयर में प्रगति और तेज कंप्यूटर प्रोसेसर ने कला को बहुत आगे बढ़ाया है। यह प्रगति समकालीन डिजिटल कला में नई कलात्मक अवधारणाओं के विकास में परिलक्षित होती है। यह कई पारंपरिक कला रूपों की पुनर्कल्पना करता है और डिजिटल कला की वैश्विक भाषा के विस्तार में योगदान देता है। आज कला जगत में कई परियोजनाओं का लक्ष्य भविष्य के लिए नए रूपों की खोज करना है। हालांकि यह कहना मुश्किल है कि डिजिटल तकनीक

जीवन के विभिन्न पहलुओं को कैसे पकड़ती है, लेकिन इसका प्रभाव निर्विवाद है। आधुनिक समय में डिजिटल प्रौद्योगिकियों का उपयोग निम्नलिखित कला रूपों में देखा जा सकता है:

### दृश्य कला

यह कला रूप मूर्त है, अर्थात इसे छूकर महसूस किया जा सकता है। ये कला रूप आमतौर पर एक कलाकार द्वारा निर्मित ठोस रूप होते हैं । सिनेमा दृश्य कल्पना चित्रण का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस डिजिटल युग में, हम कम प्रयास और न्यूनतम बजट में अपने सांस्कृतिक स्थानों, सांस्कृतिक पोशाकों आदि की दृश्य कल्पना बनाने के लिए नई तकनीकों का उपयोग कर सकते हैं। आज नई तकनीक की मदद से कोई भी किसी भी चीज को उतना ही चित्रित कर सकता है जितना वह कल्पना कर सकता है। इसलिए, आज हमारे पास अपनी कला तथा संस्कृति, विशेषकर सिनेमा में इस नए डिजिटल नवाचार का समर्थन करने और उपयोग करने का एक मजबूत कारण है। हालांकि, दूसरी ओर, हमें इस बात से भी अवगत होना चाहिए कि कुछ प्रौद्योगिकियां अनुचित उपयोगिता भी दिखाती हैं, जैसे नकली या विरूपित वीडियो आदि।

### चित्रकारी

हम मेसोलिथिक रॉक गुफा चित्रों से लेकर पुनर्जागरण चित्रों तक प्रौद्योगिकी का कोई उपयोग नहीं देखते हैं। लेकिन आज का कला रूप अत्यधिक डिजिटीकृत है, जहां एक कलाकार हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर का उपयोग करके कोई भी पेंटिंग बनाता है। ये पेंटिंग्स कई तरह के डिजाइन जैसे ज्वेलरी डिजाइन और फैशन डिजाइन में मददगार होती हैं। आज, लोगों ने अक्सर अमूर्त पेंटिंग के प्रति रुचि विकसित कर ली है, जहां डिजिटीकरण का अत्यधिक उपयोग और महत्व है। कोई भी डिजिटल रूप से कई कलात्मक अमूर्त पेंटिंग बना सकता है और उन्हें किसी भी आर्ट गैलरी में देख सकता है।

### मूर्ति

प्राचीन काल से, लोग कला के इस रूप को बनाने के लिए मिट्टी या मिट्टी के किसी भी रूप का उपयोग करते रहे हैं, लेकिन आज की डिजिटल दुनिया में डिजिटल मूर्तियां बनाने के लिए 3डी तकनीकों का उपयोग किया जा रहा है। इसे मूर्तिकला की डिजिटल छाप भी कहा जा सकता है, जो प्राजेक्शन टेक्नालॉजी पर आधारित है, जिसमें किसी मानव या वस्तु की आकृति बनाने के लिए रोशनी को सतह पर प्रक्षेपित किया जाता है जो कभी-कभी बहुत वास्तविक और सजीव लगती है। जब किसी विशाल मूर्ति को भागों में बनाया जाता है तो ठोस मूर्ति बनाने में भी प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जाता है और सटीक आकार बनाने के लिए प्रौद्योगिकी, विशेष रूप से [illegible] मैपिंग का उपयोग किया जाता है।

### वास्तुकला

वास्तुकला आमतौर पर विशाल स्मारकों और इमारतों को बनाने की कला है, लेकिन इस कला को प्रबंधित करने के लिए अन्वेषण से लेकर उत्खनन तक डिजिटल तकनीक की अत्यधिक आवश्यकता होती है। रिमोट सेंसिंग से लेकर हवाई अन्वेषण तक, हम एक वास्तुकला बनाने के लिए आवश्यक गणनात्मक डाटा इकट्ठा करते हैं।

### निष्पादन कला

यह कला रूप अमूर्त है, अर्थात इसे छुआ नहीं जा सकता लेकिन मनोवैज्ञानिक रूप से महसूस किया जा सकता है। इन कला रूपों में चेहरे के और शारीरिक भाव शामिल होते हैं।

### नृत्य

नृत्य कला बहुत प्राचीन है, लेकिन डिजिटल दुनिया में नये-नये प्रयोग किये जा रहे हैं। अब हम लेजर प्रकाश को देख सकते हैं जहां एक व्यक्ति नृत्य कर रहा है, लेकिन अंधेरे में, हम केवल विभिन्न

प्रकाशों की गतिविधियों को देखते हैं। युवा पीढ़ी के लिए यह अनोखा और मजेदार है।

### संगीत

यह भी एक बहुत ही प्राचीन और प्यारी कला है, जिसमें एक कलाकार एक वाद्य यंत्र के साथ गाता है। आधुनिक समय से पहले ये चीजें प्राकृतिक थीं, लेकिन आज की दुनिया में डिजिटीकरण का इस्तेमाल किया जा रहा है। भले ही किसी व्यक्ति की आवाज की गुणवत्ता औसत हो, वह 'ऑटो-ट्यून' की तकनीक का उपयोग करके इसे मधुर बना सकता है। कलाकारों की आवाज को सिंक्रोनाइज करने के लिए वाद्ययंत्र भी अब डिजिटल रूप से बजाए जाते हैं।

### छायांकन

थिएटर कलाकार ही असली कलाकार होते हैं जो अपनी दमदार आवाज और भाव-भंगिमाओं से दर्शकों को आकर्षित करते हैं, लेकिन सिनेमा में वीएफएक्स तकनीक और वॉयस के व्यापक उपयोग से चीजें बदल गई हैं। किसी भी सिनेमा को लोकेशन से हटकर किसी अन्य स्थान पर शूट करना अब बहुत आसान है जहां आपको वास्तविक स्थान की आवश्यकता नहीं है। प्रौद्योगिकी की सहायता से एक कृत्रिम स्थान बनाया जा सकता है।

### निष्कर्ष

डिजिटल प्लेटफॉर्म ने लोगों को कला और संस्कृति तक खुली पहुंच प्रदान की है, जिससे वे अपनी उंगलियों की मदद से आसानी से दुनिया में कहीं से भी भाग ले सकते हैं। डिजिटल तकनीक ने कला को बनाने, प्रदान करने और संरक्षित करने के तरीके को बदल दिया है। मल्टीमीडिया इंटरैक्टिव इंस्टॉलेशन और आभासी वास्तविकता अनुभव बनाने के लिए डिजिटल उपकरण और सॉफ्टवेयर व्यापक रूप से सुलभ हैं। इंटरनेट कलाकारों को वैश्विक दर्शकों से जुड़ने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान करता है और ऑनलाइन मंचों तथा क्राउडफंडिंग परियोजनाओं के लिए अन्य प्रभावशाली लोगों के साथ सहयोग करने के अवसर प्रदान करता है। सांस्कृतिक विरासत, जैसे प्राचीन वस्तुएं, दस्तावेज तथा कलाकृतियों को क्षति तथा चोरी से बचाने के लिए अभिलेखागार और संग्रहालयों द्वारा डिजिटीकृत किया जाता है। संग्रहालय, गैलरी और सांस्कृतिक सेट-अप ऑनलाइन संग्रह तथा प्रदर्शनियों का आभासी दौरा प्रदान करते हैं, जिससे लोग दुनिया भर में सांस्कृतिक विरासत की खोज कर सकते हैं। कॉपीराइट कानून और डिजिटल अधिकार तंत्र कलाकारों और उपभोक्ताओं के हितों का ध्यान रखने का प्रयास करते हैं। फिर भी, कॉपीराइट, स्वामित्व और बौद्धिक संपदा अधिकारों के मुद्दे अक्सर खबरों में रहते हैं। सांस्कृतिक पहचान और प्रतिनिधित्व के लिए डिजिटल तकनीक का दूरगामी प्रभाव है, क्योंकि ये प्लेटफॉर्म लोगों के अपने तथा दूसरों के विचारों को प्रभावित करते हैं और सांस्कृतिक मानदंडों तथा मूल्यों को आकार देते हैं। निष्कर्षत:, डिजिटल युग ने नई कला और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के रूपों को बनाने में मदद की है, जिससे वे दुनिया भर में सुलभ हो गए हैं। फिर भी, यह गोपनीयता, डिजिटल अधिकार और कॉपीराइट उल्लंघन के मुद्दों पर भी काम आता है।

हालांकि डिजिटल तकनीक का उपयोग लगभग सभी कला रूपों में किया जाता है, जो इसे अधिक रोमांचक तथा सुलभ बनाता है, लेकिन कभी-कभी यह दर्शकों को अवास्तविक आनंद देता है, इसलिए सच्ची कला का उद्देश्य विफल हो जाता है। हमें डिजिटल तकनीक का कितना उपयोग करना चाहिए, इसके लिए हमें खुद को प्रतिबंधित करना चाहिए या सीमाएं बनानी चाहिएं। ❑

**फार्म - IV**

**योजना (हिंदी) मासिक पत्रिका के स्वामित्व तथा अन्य विवरण:**

| | | |
|---|---|---|
| 1. | प्रकाशन का स्थान | नयी दिल्ली |
| [illegible] | प्रकाशन की अवधि | मासिक |
| [illegible] | मुद्रक का नाम | अनुपमा भटनागर |
| 4. | नागरिकता | भारतीय |
| 5. | पता | 655, सूचना भवन, सीजीओ परिसर, लोधी मार्ग, नयी दिल्ली-110003 |
| 6. | प्रकाशक का नाम | अनुपमा भटनागर |
| 7. | नागरिकता | भारतीय |
| 8. | पता | 655, सूचना भवन, सीजीओ परिसर, लोधी मार्ग, नयी दिल्ली-110003 |
| 9. | संपादक का नाम | डॉ ममता रानी |
| 10. | नागरिकता | भारतीय |
| 11. | पता | 648, सूचना भवन, सीजीओ परिसर, लोधी मार्ग, नयी दिल्ली-110003 |
| 12. | उन व्यक्तियों का नाम व पते जो पत्रिका के पूर्ण स्वामित्व में कुल पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के स्वामित्व/हिस्सेदार हों | सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय<br>भारत सरकार<br>नयी दिल्ली-110003 |

मैं अनुपमा भटनागर एतद् द्वारा घोषणा करती हूं कि ऊपर दिए गए विवरण मेरी पूरी जानकारी एवं विश्वास के अनुसार सत्य हैं।

दिनांक: **11 जनवरी 2024**

अनुपमा

(अनुपमा भटनागर)

प्रकाशक

# हमारे प्रकाशन

गांधी साहित्य, भारतीय इतिहास, जाने-माने व्यक्तियों की जीवनियां, उनके भाषण और लेखन, आधुनिक भारत के निर्माता शृंखला की पुस्तकें, कला एवं संस्कृति, बाल साहित्य

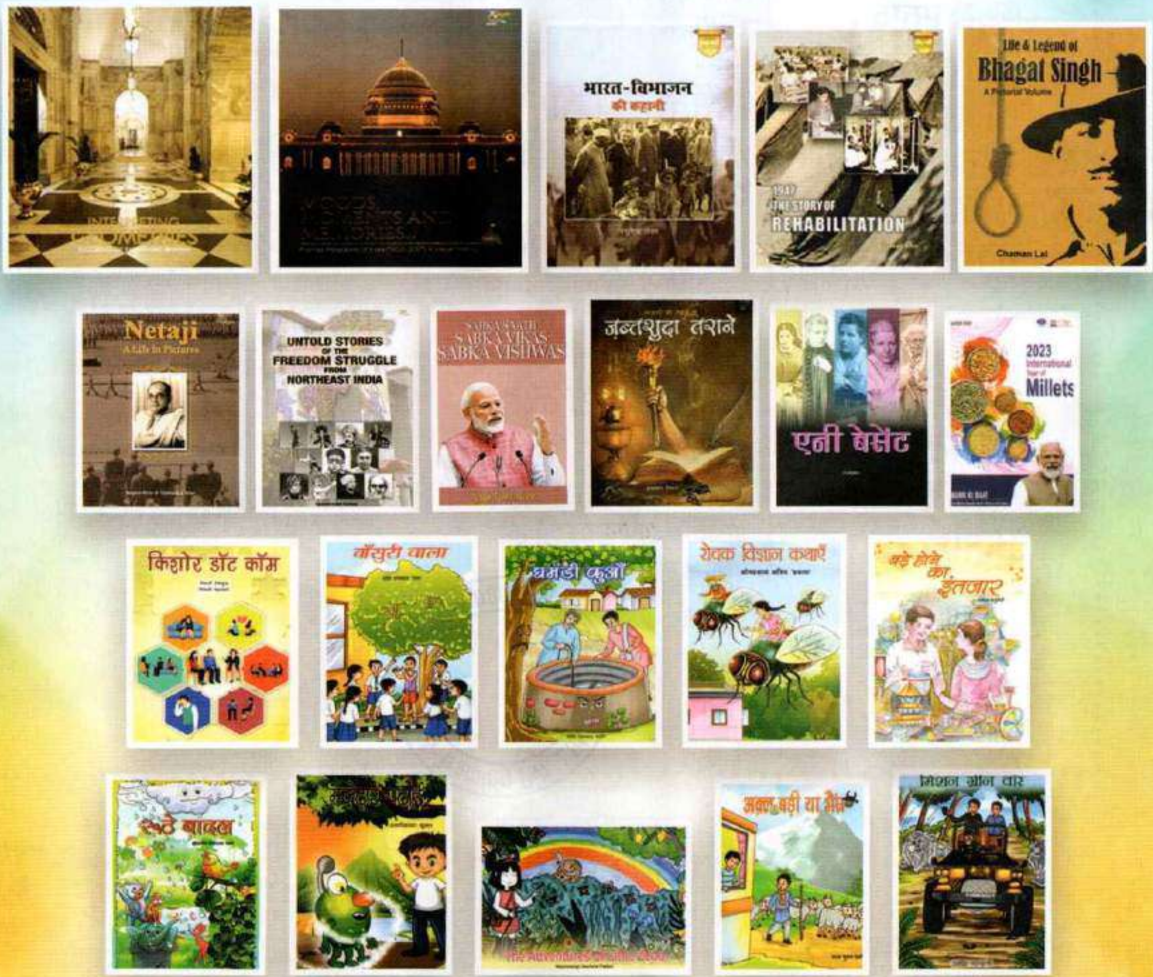


**प्रकाशन विभाग**
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

संकलन ऑनलाइन खरीदने के लिए कृपया **www.bharatkosh.gov.in** पर जाएं।
ऑर्डर के लिए कृपया संपर्क करें : फोन : 011-24365609, ईमेल : businesswng@gmail.com
वेबसाइट : **www.publicationsdivision.nic.in**

/dpd_india  @DPD_India  /publicationsdivision

# गरीब

**प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना (PM-GKAY) से सभी के लिए खाद्य सुरक्षा**

**विश्व की सबसे बड़ी सामाजिक कल्याण योजना,**
5 वर्षों के लिए बढ़ाई गयी, **80 करोड़** से अधिक लोगों को खाद्य सुरक्षा प्रदान करने का लक्ष्य

**पीएम आवास योजना से गरीबों के लिए पक्के मकान**

**वंचितों के लिए 4 करोड़ से अधिक पक्के घर**
अपने घर का सपना पूरा कर सम्मान से जीवन जीने का मिला अधिकार

**पीएम उज्ज्वला योजना से धुआं रहित रसोई**

**10 करोड़ से ज्यादा परिवार**
खाना पकाने के स्वच्छ ईंधन कनेक्शन के साथ जी रहे स्वस्थ जीवन

> **"भारत बदल रहा है और बहुत तेजी से बदल रहा है। आज लोगों का आत्मविश्वास, सरकार के प्रति उनका विश्वास, और नए भारत के निर्माण का संकल्प चारों तरफ दिखता है।"**
>
> - प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

## गरीब अन्नदाता युवा नारी शक्ति का सश

**प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्र के समावेशी विकास पर विशेष जोर दिया है, और इसलिए उन्होंने हमें GYAN: गरीब, युवा, अन्नदाता और नारी शक्ति पर ध्यान केंद्रित करने का रोडमैप दिया है।**

# युवा

## मुद्रा योजना से युवा उद्यमियों के लिए ऋण

युवा भारत के सपनों को पंख देने और आत्मनिर्भरता के अवसर पैदा करने के लिए **₹26 लाख करोड़** से अधिक के 45 करोड़ ऋण स्वीकृत

## स्टार्टअप इंडिया के तहत स्टार्टअप के माध्यम से रोजगार सृजन

100 से अधिक यूनिकॉर्न के साथ भारत दुनिया के **टॉप 3 स्टार्टअप इकोसिस्टम** वाले देशों में शामिल और 1.14 लाख स्टार्टअप भारत के महत्वाकांक्षी युवाओं के लिए **12 लाख से अधिक नौकरियां** पैदा कर रहे हैं

## खेल जगत में खुले नए द्वार

**खेलो इंडिया और टारगेट ओलंपिक पोडियम** जैसी योजनाओं से प्रेरित होकर टोक्यो ओलंपिक, पैरालंपिक और हांगझोऊ एशियन गेम्स में **भारतीय खिलाड़ियों का अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन**

# अन्नदाता

## पीएम किसान सम्मान निधि से खुशहाल किसान

किसानों को हर साल ₹ 6,000 की सुनिश्चित आय; अब तक **11.8 करोड़ किसानों को ₹2.8 लाख करोड़ की सहायता** से वित्तीय सुरक्षा

## किसान क्रेडिट कार्ड से तत्काल ऋण की सुविधा

किसान क्रेडिट कार्ड (KCC) से **7.3 करोड़ से अधिक किसानों को ₹9 लाख करोड़ का ऋण;** एक सुरक्षा कवच जो उनकी फसलों को सहारा देता है और उन्हें विकास की नई संभावनाओं के लिए सशक्त बनाता है

## कृषि अवसंरचना कोष से कृषि बुनियादी ढाँचे का आधुनिकीकरण

कृषि अवसंरचना कोष के तहत **₹1 लाख करोड़** के निवेश को मंजूरी, **कृषि पद्धतियों को आधुनिक बनाने और किसानों की आय बढ़ाने** की दिशा में एक बड़ा कदम

# क्तीकरण

# नारी शक्ति

## महिलाओं के लिए सामुदायिक सहायता

**10 करोड़ से ज्यादा महिलाएं** स्वयं सहायता समूहों से जुड़ीं;

**2 करोड़ महिलाओं को लखपति दीदी** बनाने का संकल्प

## सुकन्या समृद्धि योजना से बेटियों के लिए वित्तीय सुरक्षा

10 वर्ष से कम उम्र की हर बेटी का भविष्य सुरक्षित करने के लिए **3.2 करोड़ सुकन्या समृद्धि खाते खुले,** एक सशक्त भविष्य का वादा

## जल जीवन मिशन से स्वच्छ पेयजल

**14 करोड़ से अधिक परिवारों** के लिए नल से स्वच्छ पेयजल उपलब्ध, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों की सभी महिलाओं और परिवारों का अच्छा स्वास्थ्य और कल्याण सुनिश्चित

cbc 22201/13/0253/2324

YH-2591/2024

"कला आत्मा पर दैनिक जीवन में आने वाले मैल को साफ कर देती है" - पाबलो पिकासो

# उपचार और अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है कला

**डॉ धारिणी मिश्रा** | बाल विकास स्पेशल एजुकेटर। ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर एवं भारतीय सूचना सेवा की पूर्व अधिकारी। ईमेल: mishradharini@gmail.com

**पारुल काला** | शिक्षक और डाउन सिंड्रोम वाले 18-वर्षीय मूक दिव्यांग कलाकार की मां।

कला स्वयं के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति है। यह विश्व के प्रति कलाकार का अपना अनूठा दृष्टिकोण है। भाषा अथवा संगीत की भांति ही कला भी मानव को मिली ऐसी ईश्वरीय या कहें कि प्राकृतिक देन है जो उसे पशुओं की तुलना में श्रेष्ठ बनाती है। कला मानव-मस्तिष्क या मनुष्य की सोच को कुछ इस प्रकार प्रभावित करती है जिसे ज्ञान अथवा शिक्षा के माध्यम से सही-सही समझ पाना सहज नहीं है। परन्तु कला के माध्यम से हम मानव स्वयं अपने बारे में बहुत गहराई से जान-समझ पाते हैं तथा अन्य लोगों के साथ सामंजस्य और एकात्मकता भी स्थापित करने में सफल हो सकते हैं। मनोवैज्ञानिक विश्लेष्कों ने निष्कर्ष निकाला है कि कला आत्म विकास या हृदय परिवर्तन का प्रभावी और सशक्त साधन है जिससे व्यक्ति समूची मानवता के लिए उपयोगी भूमिका निभाने योग्य बन जाता है। दार्शनिक रूप से देखें तो कला सदैव वास्तविकता और समस्या की अभिव्यक्ति करती है-जो उस वास्तविकता के प्रति प्रतिक्रिया होती है जिसमें हमें रहना पड़ता है। यह वास्तविकता की आलोचना, प्रशंसा या उसमें सुधार की गूंज होती है। कला वास्तविकता का आदर्श मॉडल प्रस्तुत करती है या कई बार यह वास्तविकता की आलोचक या विरोधी भी बन जाती है।

## कला का प्रभाव शब्दों से कहीं अधिक है

मनोरंजन के लिए कला को तभी से माध्यम बनाया जा रहा है जब मानव गुफाओं में रहता था। वन्य पशुओं के शिकार के अनुभवों की स्मृति ताजा करना और मनोरंजन की अनुभूति करना सर्वाधिक साहसी और सक्षम शिकारियों के लिए भी रोंगटे खड़े करने वाला अनुभव रहा होगा। अनादि काल से ही

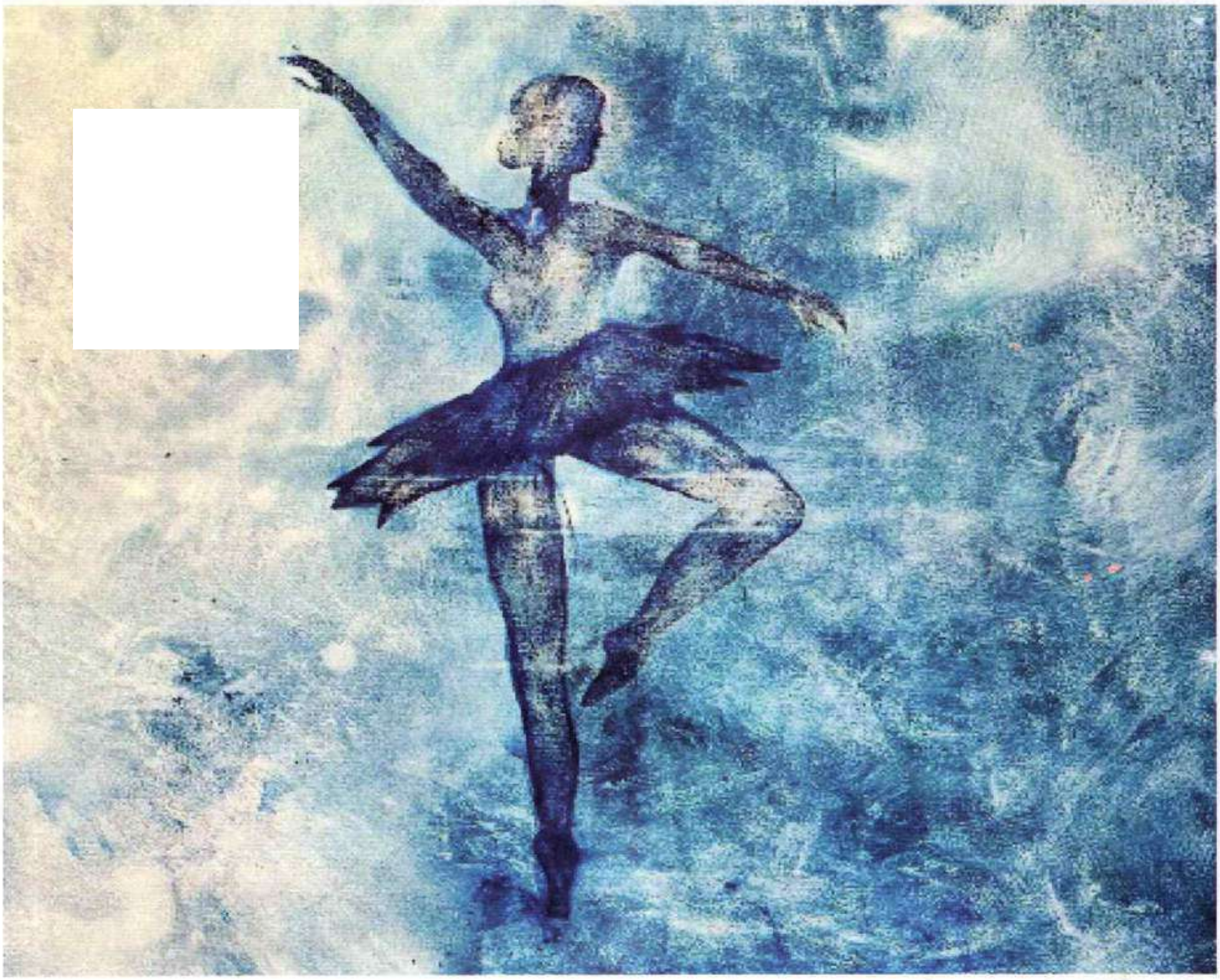

गुफाओं में रहने वाले मनुष्यों ने कला की मनोरंजक क्षमता के साथ ही इसकी रोग निवारक तथा उपचार क्षमता को भी भली प्रकार जान लिया था। मुक्त अभिव्यक्ति या मन की उलझन को व्यक्त कराना मनोवैज्ञानिकों की सर्वाधिक उपयोगी उपचार प्रणाली रही है। इस चिकित्सा पद्धति में उपचार के लिए कलात्मक अभिव्यक्ति के इसी पहलू का प्रयोग किया जाता है। जहां ललित कला में सुन्दर और अनुपम कृति के सृजन के लिए प्रतिभा और कौशल को अत्यधिक निपुणतापूर्वक प्रयोग किया जाता है वहीं कला उपचार-पद्धति में कला की आत्माभिव्यक्ति के माध्यम से चिकित्सा करने पर बल दिया जाता है। समन्वित क्रियाएं अपनाकर कला थेरेपी में मन, शरीर और आत्मा के बीच सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास रहता है जो मौखिक या शाब्दिक अभिव्यक्ति से भिन्न और अधिक प्रभावी होता है। अंग संचालन, संवेदी अभिव्यक्ति, धारणात्मक तथा प्रतीकात्मक अवसर संचार प्रवाह की ग्राह्यता और अभिव्यक्ति की वैकल्पिक विधाओं को अपनाने की प्रेरणा देता है जिनसे भाषागत बंधनों और सीमाओं को आसानी से पार किया जा सकता है। दृश्यात्मक और प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति अनुभवों को स्वर प्रदान करती है और व्यक्तिगत, सामूहिक (सामुदायिक) तथा समाज के स्तर पर बड़ा बदलाव लाने की भूमिका निभाती है। इसकी मूल धारणा यही है कि कला थेरेपी या कला चिकित्सा में लोग अपनी भावनाओं को जान-समझकर नए परिप्रेक्ष्य में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकते हैं और यह भी जान लेते हैं कि कलात्मक अभिव्यक्ति मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से लाभप्रद है। कला चिकित्सक (थेरेपिस्ट) एक सेशन (बैठक) में यह समझने का प्रयास करता है कि तनाव या कष्ट का मूल कारण क्या है। फिर चिकित्सक रोगी को ऐसी कला के सृजन की प्रेरणा देता है जिसमें उसकी समस्या का कारण स्पष्ट हो सके। ऐसी रचना पर जोर नहीं दिया जाता जो सर्वथा दोषरहित और एकदम परफेक्ट हो। यह एकदम स्वस्फूर्त और मुक्त रूप से की गई कृति होनी चाहिए जिसमें किसी वर्ग विशेष को लक्ष्य न किया गया हो।

परन्तु विडम्बना यही है कि इसी वजह से कई बार सुप्रशिक्षित कलाकार कला-चिकित्सा पद्धति के लाभ प्राप्त करने में इतने सफल नहीं हो पाते। इसके लिए बेहतर आऊटपुट

के लिए उन्हें असल में हर दृष्टि से पूर्ण अभिव्यक्ति बिम्बित करने की निपुणता (साध) को भुलाकर परिस्थिति के अनुरूप कालात्मक अभिव्यक्ति पर ध्यान केंद्रित करना होगा।

### बच्चे और कला

कई बच्चे अपनी भावनाएं बोलकर बताने की जगह ड्राइंग या पेंटिंग बनाकर या किसी अन्य कलात्मक तरीके से ज्यादा अच्छी तरह से व्यक्त कर पाते हैं, बोलकर नहीं। कला चिकित्सक बच्चे की इस कला अभिव्यक्ति की मदद से उसकी भावनाओं और सोच को बेहतर ढंग से आसानी से समझ सकते हैं। वे बच्चों को यह भी ठीक से समझा सकते हैं कि वे सृजनात्मक या रचनात्मक माध्यम अपनाकर अपनी परेशानियां व्यक्त करें। कष्ट और तनाव झेलने वाला बच्चा आमतौर पर यह अनुमान नहीं लगा सकता कि जो कुछ भी हो रहा है वह क्यों और कैसे हो रहा है। रंगों की मदद से वह अन्य लोगों को अपनी जरूरतों के बारे में बताने और अपनी भावनाएं उन तक पहुंचाने में ज्यादा आसानी महसूस कर सकता है। एक विशेष परिस्थिति के उदाहरण से समझिए- किंडरगार्टन (केसी) में पढ़ने वाले एक बेचैन और फुर्तीले बच्चे ने अपने आर्ट पेपर पर काले और भूरे रंग भरकर बनाई पेंटिंग को नाम दिया 'थिएटर में फिल्म देखते हुए।' इस पर इसके अध्यापक को उत्सुक्ता हुई और उसने जब बच्चे से अकेले में बात की तो उसे साफ समझ में आ गया कि वह छोटा बच्चा थिएटर में फिल्म देखते समय आगे वाली पंक्ति की काली सीट के पार या उसके आगे का कुछ भी नहीं देख पाता था। पेंटिंग की कला के जरिए वह बच्चा अपनी बेचैनी का कारण बयान करने में कामयाब हुआ और अपने से बड़ी उम्र वाले लोगों को समझा पाया कि थिएटर में तीन घंटे के उस समय में उसके मन-मस्तिष्क पर क्या कुछ गुजरती थी। यदि कला की सहायता नहीं मिल पाती तो उस बच्चे को उसके अभिभावक और देखरेख करने वाले जिद्दी और बेचैन बताकर उसकी अनदेखी करते रहते।

### दिव्यांग या विशेष जरूरतों वालों के लिए कला का महत्व

विशेष जरूरतों वाले लोग खासकर बच्चे, दुनिया का जैसा अनुभव करते हैं उसकी हम इस लेख को पढ़ने वाले सामान्य लोग कल्पना भी नहीं कर सकते। शारीरिक, मानसिक या मनोवैज्ञानिक दृष्टि से दिव्यांगता की चुनौती को झेलना अपने-आप में बड़ी कठिन त्रासदी है। इस प्रकार की दिव्यांगता वाले बच्चों को संचार यानी अपनी बात समझाने और सामने वाले की बात समझने की संकटपूर्ण स्थिति से गुजरना पड़ता है। उन्हें अपनी बात कहने में कठिनाई होती है और अपनी भावनाएं व्यक्त करने के लिए अलग तरीके से प्रयास करने पड़ते हैं क्योंकि उनकी खास जरूरतें और चुनौतियां (दिव्यांगता) भी अलग प्रकार की होती हैं।

उन बच्चों के माता-पिता और भाई-बहन भी उनके सबसे करीबी होने के बावजूद दुनिया के बारे में उनके नजरिये को नहीं समझ पाते। कई बार तो खास जरूरतों वाले बच्चों में व्यवहार संबंधी परेशानियां भी रहती हैं। इसकी साधारण सी वजह यही है कि दुनिया के बारे में उनका अनुभव इतना अलग तरह का होता है कि उसके बारे में बता पाना बेहद मुश्किल होता है। सामान्य जन इस बात का अंदाजा भी नहीं लगा पाते कि वे कैसी चुनौतीपूर्ण स्थिति झेल रहे होते हैं, वे अपने भीतर चल रहे द्वंद्व के बारे में कुछ भी बता पाने में असमर्थ होते हैं तथा शब्दों से, इशारों या संकेतों से अथवा शारीरिक हावभाव से भी वे अपनी उलझन समझा नहीं पाते।

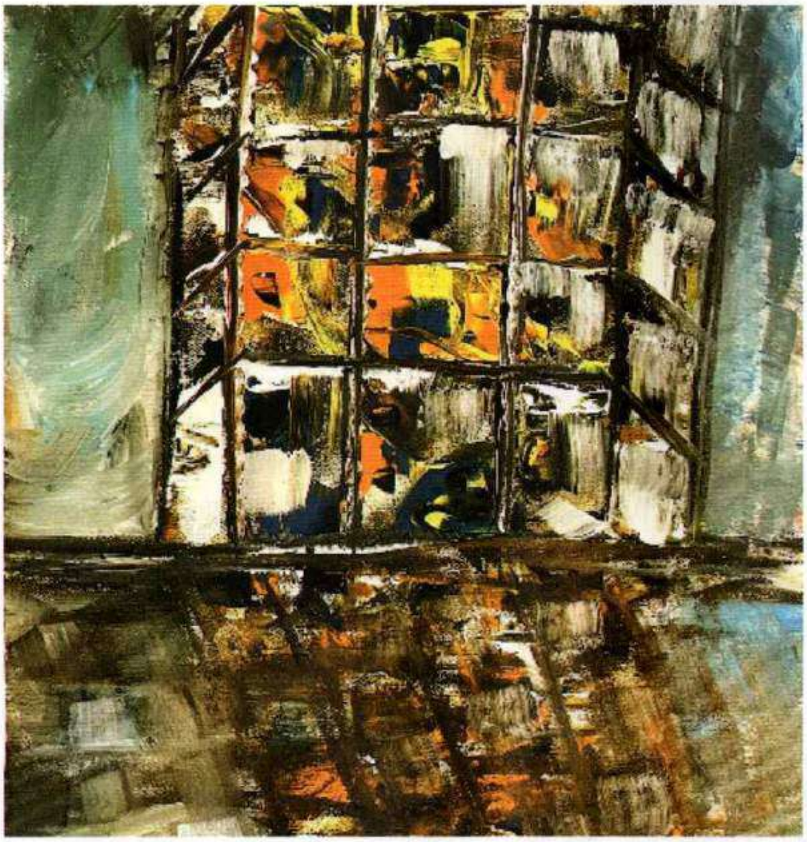

सही या गलत की सोच किए बिना अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का नाम ही 'कला' है और यही तथ्य 'कला' को चिकित्सा और उपचार का सशक्त माध्यम बनाता है। कोई भी व्यक्ति, चाहे न्यूरोटिपिकल यानी अंगों के संचालन में कुशलता या क्षमता वाला हो अथवा अलग तरह से सोचने, अनुभव करने और व्यवहार करने वाला न्यूरोडाइवर्जेंट हो, शारीरिक दृष्टि से दिव्यांग (विकलांग) हो या विशेष योग्यता या गुणों वाला हो- उसे कला से संतोष और चैन प्राप्त होता है। देखने में तो पेंटिंग, ड्राइंग और मोल्डिंग (ढलाई)

या स्कल्पटिंग (मूर्तिकला) कला की विभिन्न विधाएं हो हैं।

कला के माध्यम से विशेष जरूरतों वाले बच्चों की अनेकानेक तरीकों से मदद की जा सकती है और उनका उपचार भी हो सकता है।

हर व्यक्ति में कला की किसी न किसी विधा में सृजन करने की क्षमता और योग्यता होती है। इसलिए जो बच्चे शैक्षिक, व्यावसायिक अथवा शारीरिक उपलब्धियों के मानकों के हिसाब से कामयाब नहीं हो पाते वे कला का निर्माण तो अवश्य ही कर सकते हैं। इसके लिए बस खूबसूरत रंग, पेंसिल या मोमी रंग अर्थात् क्रेयॉन्स की जरूरत होती है। या हो सकता है कि कागज, ग्लू (गोंद) या सादे चॉक की जरूरत भी पड़े। यह किसी भी जगह हो सकती है। कागज, फर्श, दीवार, घास, टाइल, मिट्टी या किसी भी सतह पर यह कलाकृतियां बनाई जा सकती हैं।

इसके परिणाम तत्काल मिलते हैं जिससे बच्चे को प्रयोग करने का अवसर मिल जाता है और उसमें सकारात्मकता के भाव प्रबल होते हैं। ब्रश से पेंट के कुछेक स्ट्रोक लगते ही पेंट किए जाने वाली जगह में बदलाव दिखने लग जाता है।

सबसे अहम बात यह है कि कला व्यक्ति (बच्चे) को समूची प्रक्रिया का संचालक बना देती है। कलाकार अपनी इच्छा से आगे बढ़ता है और सही या गलत उत्तर की जरा सी भी परवाह किए बिना अपना कार्य करता चला जाता है। इससे बच्चे का आत्मविश्वास बढ़ता है और उसे अपनी अभिव्यक्ति के लिए अधिक से अधिक प्रयोग करने का संबल प्राप्त होता जाता है।

आर्ट थेरेपी अर्थात् कला चिकित्सा पद्धति से लोगों को अपने मस्तिष्क की ग्रहण करने की क्षमता और मस्तिष्क संचालन की संवेदी प्रक्रिया को बेहतर करने में मदद मिलती है। आंखों और हाथों के संचालन में सामंजस्य या तालमेल किसी भी उपकरण या सतह पर अभ्यास करने से विकसित होने लगता है चाहे पेंटिंग उंगली से बनाएं या क्रेयॉन (मोमी चॉक) से या किसी अन्य वस्तु से। सीखने की इस अहम

प्रक्रिया में जो बच्चा अत्यधिक चंचल-चुलबुला था वह भी बैठना सीख जाता है और बिना हिलेडुले चुपचाप अपने काम पर ध्यान लगाने लग जाता है। एक बार बच्चा पूरी लगन से ध्यान देना सीख ले तो फिर उसके लिए सीखने की असीम संभावनाएं खुल जाती हैं।

बच्चे में किसी न किसी रूप में कलात्मक अभिव्यक्ति तो स्वाभाविक ही विकसित होने लगती है पर इसके आगे मंथन और दोहन की आवश्यकता रहती है। बच्चे को तराशकर कला सीखने की ओर प्रवृत्त करना पड़ता है तथा उसे सतह पर ब्रश, क्रेयॉन या पेंसिल चलाने का सलीका समझाना होता है। दिव्यांगताओं वाले बच्चों को शुरू में तो हाथ पकड़कर ही ब्रश चलाना सिखाया जाता है तथा उसमें सकारात्मक भाव भरने की भी जरूरत पड़ती है। धीरे-धीरे अभ्यास के सहारे वह अपने उपकरणों को प्रभावी तरीके से इस्तेमाल करना सीखकर कलाकृति तैयार करने लग जाता है। जिस प्रक्रिया से बच्चे को खुशी मिले और उसे मजा आए वही कला है। रंगों या अभिव्यक्तियों का चयन तो हमेशा ही सुन्दर होता है। असल में तो यह बच्चे की अंतरात्मा की ही अभिव्यक्ति है। बच्चे की आत्मा का विस्तार ही उसकी कलाकृति में झलकता है। जिसे शब्दों में इसका वर्णन नहीं किया जा सकता। प्रभावी तरीके से इस्तेमाल हो तो कला संघर्षों के समाधान और कष्टों के निवारण में महत्वपूर्ण योगदान कर सकती है।

कला को चिकित्सा पद्धतित के रूप में प्रयोग करने के पीछे मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया का उद्देश्य ऐसी शांत मन:स्थिति प्राप्त करना है जो सही-गलत या अच्छे-बुरे जैसे कोई भी निर्णय न ले। यह आधार बन जाने के बाद ही चिकित्सा और अभिव्यक्ति की प्रक्रियाएं आगे बढ़ाई जा सकती हैं। कला के माध्यम से व्यक्ति को स्वयं को सुरक्षित स्थान तक ले जाने की स्वतंत्रता प्राप्त होती है। साथ ही, वह ऐसी व्यक्तिगत और निजी स्थिति में पहुंच जाता है कि संकट या समस्या आने पर वह आसानी से उसमें फिर से लौट सकता है। यह मानसिक रूप से पूरी निश्चिंतता प्रदान करता है-जैसे संकट भरे हालात में घर या आश्रय मिल गया हो।

कुल मिलाकर, चिकित्सा और ऊर्जा के स्रोत के रूप में कला के लाभ संक्षेप में इस प्रकार हैं:

- **अभिव्यक्ति में सहायक :** जब व्यक्ति अपने मनोभावनात्मक विचारों को देखने की स्थिति पा लेता है और उन्हें स्पष्ट रूप से देख पाता है तो उसे ऐसी भावनाओं के स्रोत का विश्लेषण करने में सहायता मिलती है। यह चिकित्सा की दिशा में पहला चरण है।
- **विश्वास जमाना और नियंत्रण प्राप्त करना :** कला कभी 'गलत' नहीं होती। कला के इस स्वाभाविक गुण, स्वभाव से ही कलाकार में स्थिति पर नियंत्रण पा लेने का भाव जगता है और उसमें इच्छित विकल्प चुनने की क्षमता-योग्यता भी आ जाती है।
- **किसी बच्चे की बौद्धिक निपुणता और ग्राह्य क्षमता में सुधार :** कला वास्तव में क्रिया है जिसे भौतिक रूप से किया जाता है। यह संचालन, अर्थात् व्यक्ति का क्रियाकलाप और उसका परिणाम (जो कभी गलत नहीं होता) ही ग्रहण करने की क्षमता और मस्तिष्क संचालन में विकास को जन्म देता है तथा भावनाओं का नियमन भी करता है। फिर, कला में लगने वाले व्यक्ति का मस्तिष्क शांत और लक्ष्यकेंद्रित होना जरूरी है और यही संज्ञान क्षमता के विकास की पूर्व-शर्त भी है।
- **सृजनात्मक अभिव्यक्ति :** कला सदा ही रचनात्मक और सकारात्मक होती है तथा विनाश और अड़चन/बंधन की विरोधी होती है। यह आत्माभिव्यक्ति जगाकर उसे सहेजती है जो सृजनशीलता को जन्म देती है।

जो भी हो, निष्कर्ष में यह कहना जरूरी है कि कभी-कभार थेरेपी (चिकित्सा पद्धति) गलत भी हो सकती है। इसका सबसे बड़ा और एकमात्र कारण है किसी बच्चे या बड़े (वयस्क) को जबरन कला की ओर धकेलना। यदि व्यक्ति को कोई विकल्प चुनने की आजादी नहीं दी जाएगी तो चिकित्सा पद्धति से लाभ होने की कोई संभावना नहीं होगी। पेंटिंग या मूर्ति बनाते समय या किसी कलात्मक अभिव्यक्ति में भाग लेते समय शांत चित्त होना चाहिए और स्वयं को पूर्णत: सुरक्षित अनुभव करना चाहिए। चिन्ता और भय ऐसी सबसे नकारात्मक स्थितियां हैं जो उपचार और विकास में बाधक बनती हैं। इसलिए जरूरी है कि थेरेपी के दौरान कलाकार स्वयं को सुखद स्थिति में सुरक्षित समझे तथा कलात्मक माध्यम की पूरी शक्ति का स्वतंत्रतापूर्वक प्रयोग करने की स्थिति में हो तथा किसी भी कार्य को निर्धारित समय-सीमा में पूरा करने की कोई बाध्यता उसके समक्ष न हो।

जाने-माने मनोविज्ञानी सिगमंड फ्रायड ने कला को अतृप्त और दबी हुई भावनाओं को रचनात्मक और सामाजिक दृष्टि से उपयुक्त तरीके से पूरा करने का सशक्त माध्यम बताया है। मनोविज्ञान के विश्लेषकों ने कला को किसी व्यक्ति की वास्तविकता को उसके उत्थान या परिवर्तन के माध्यम से सभी के लिए उपयोगी बनाने का साधन बताया है।

दार्शनिक दृष्टि से देखा जाए तो कला सदैव ही वास्तविकता की समस्या का प्रतिबिम्ब होती है-उस वास्तविकता की ऐसी प्रतिक्रिया या प्रति उत्तर है जिसमें हमें मजबूरन जीना पड़ता है। यह वास्तविकता की आलोचना, सराहना या सुधार है। कला वास्तविकता के आदर्श मॉडल का निर्माण करती है और कभी-कभी उसकी आलोचक या विरोधी भी बन जाती है।

*नोट : इस लेख में इस्तेमाल किए गए सभी चित्र 'डाउन सिंड्रोम' से पीड़ित 18-वर्षीय कलाकार देव ने तैयार किए हैं।* ❑

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

# देश के सबसे बड़े सरकारी प्रकाशन समूह संग व्यापार का अवसर

## हमारी लोकप्रिय पत्रिकाओं और साप्ताहिक रोज़गार समाचार की विपणन एजेंसी लेकर सुनिश्चित करें आकर्षक नियमित आय

**विपणन एजेंसी मिलना... मतलब**

- ✓ असीमित लाभ
- ✓ निवेश की 100% सुरक्षा
- ✓ स्थापित ब्रांड का साथ
- ✓ पहले दिन से आमदनी
- ✓ न्यूनतम निवेश-अधिकतम लाभ

**रोज़गार समाचार के एजेंसी धारकों के लिए लाभ**

| प्रतियों की संख्या | खुदरा मूल्य में छूट |
|---|---|
| 20-1000 | 25% |
| 1001-2000 | 35% |
| 2001-अधिक | 40% |

**मासिक पत्रिकाओं के एजेंसी धारकों के लिए लाभ**

| प्रतियों की संख्या | खुदरा मूल्य में छूट |
|---|---|
| 20-250 | 25% |
| 251-1000 | 40% |
| 1001-अधिक | 45% |

## विपणन एजेंसी पाना बेहद आसान

- किसी शैक्षणिक योग्यता की बाध्यता नहीं
- कोई व्यावसायिक अनुभव जरूरी नहीं
- खरीद का न्यूनतम तीन गुना निवेश (पत्रिकाओं हेतु) अपेक्षित

सम्पर्क

रोज़गार समाचार
फोन: 011-24365610
ई-मेल: sec-circulation-moib@gov.in

पत्रिका एकक
ई-मेल: pdjucir@gmail.com
फोन: 011-24367453

पत्र भेजें : रोज़गार समाचार, कक्ष संख्या-779, 7वां तल, सूचना भवन, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003

# कला संग्रहालयों पर डिजिटल प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया का प्रभाव

**सोमा घोष**

भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के तहत सालार जंग संग्रहालय, हैदराबाद में लाइब्रेरियन और सोशल मीडिया अधिकारी के रूप में कार्यरत। वे कला इतिहास और पुस्तकालयों पर लिखती हैं और सालार जंग संग्रहालय के लिए दो मोनोग्राफ भी लिख चुकी हैं। ईमेल: somaghosh1133@gmail.com

**यह लेख इस बारे में बात करता है कि भारत सहित दुनिया भर में 'कला संग्रहालय' कितने महत्वपूर्ण हैं, उनके संग्रह जो उनके देशों और अन्य क्षेत्रों के कला इतिहास, संस्कृति और विरासत के बारे में बात करते हैं, और जो 21वीं सदी में अपनी उपस्थिति और प्रासंगिकता को अधिक से अधिक दर्शाने के लिए डिजिटलीकरण और सोशल मीडिया का उपयोग कर रहे हैं। 21वीं सदी महत्वपूर्ण कला संग्रहालयों की गणना करते समय, यह चर्चा की जाती है कि कैसे सोशल मीडिया वस्तुओं और कलाकृतियों के समूहों के बारे में चयनात्मक प्रसार और कहानियों के माध्यम से एक संग्रहालय के अस्तित्व और अनुभव में अंतर ला रहा है, और घटनाओं और अन्य समाचारों के बारे में ऑनलाइन जनता को सूचित कर रहा है। यह एक महत्वपूर्ण कला संग्रहालय, अर्थात् सालार जंग संग्रहालय, हैदराबाद है और इस दिशा में अपने प्रयासों पर ध्यान केंद्रित करता है ताकि यह भविष्य में डिजिटल मीडिया पर अपनी उपस्थिति दर्ज कर सके।**

संग्रहालय शक्तिशाली स्थान हैं। जीवन के सभी क्षेत्रों से लोग इसे समझने और इसके बारे में खुद को जागरूक करने के लिए एक तरह के क्यूरेटेड संग्रह को देखने आते हैं। संग्रहालयों में, 'कला' संग्रहालय विशेष संग्रहालय हैं जो दुनिया भर या विशिष्ट क्षेत्रों से कला एकत्र करते हैं, संरक्षित करते हैं और प्रदर्शित करते हैं। दुनिया भर में कई देशों में कला संग्रहालय मौजूद हैं। दुनिया भर में अनगिनत कला संग्रहालय हैं, प्रत्येक का अपना अनूठा संग्रह और फोकस है। कला संग्रहालय एक सार्वजनिक या निजी संस्थान है जो जनता की शिक्षा और आनंद के लिए कला के कार्यों को एकत्रित, संरक्षित, प्रदर्शित और व्याख्या करता है। इन संस्थानों में आम तौर पर पेंटिंग, मूर्तियां, फर्नीचर, चित्र, प्रिंट, तस्वीरें, कपड़ा, चीनी मिट्टी की चीज़ें और सजावटी कला सहित विविध प्रकार की कलात्मक वस्तुएं होती हैं।

## भारत में संग्रहालय

भारत कई कला संग्रहालयों का घर है जो देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और कलात्मक परंपराओं को प्रदर्शित करते हैं। भारत में कुछ उल्लेखनीय कला संग्रहालयों में राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली शामिल है: राष्ट्रीय संग्रहालय, भारत के सबसे बड़े संग्रहालयों में से एक है, जिसमें भारतीय इतिहास के विभिन्न कालखंडों की कला, कलाकृतियों और पुरावशेषों का विशाल संग्रह है। इसमें मूर्तिकला, पेंटिंग, सजावटी कला, सिक्के और पांडुलिपियों का संग्रह है। नैशनल गैलेरी ऑफ मॉडर्न आर्ट (एनजीएमए), नई दिल्ली: 1954 में स्थापित, एनजीएमए भारत के प्रमुख कला संस्थानों में से एक है, जो आधुनिक और समकालीन भारतीय कला का प्रदर्शन करता है। इसमें प्रसिद्ध भारतीय कलाकारों द्वारा चित्रों, मूर्तियों और अन्य कलाकृतियों का एक व्यापक संग्रह है। सालार जंग संग्रहालय, हैदराबाद: मूसी नदी के तट पर स्थित है, सालार जंग संग्रहालय कला और प्राचीन वस्तुओं का दुनिया भर में सबसे बड़े निजी संग्रहों में से एक है। इसके संग्रह में विभिन्न संस्कृतियों और सभ्यताओं की पेंटिंग, मूर्तियां, वस्त्र, चीनी मिट्टी की चीज़ें और फर्नीचर शामिल हैं। छत्रपति शिवाजी महाराज वास्तु संग्रहालय (पूर्व में प्रिंस ऑफ वेल्स संग्रहालय), मुंबई: मुंबई के इस संग्रहालय में भारतीय कला का एक प्रभावशाली संग्रह है, जिसमें भारतीय इतिहास के विभिन्न कालखंडों की मूर्तियां, लघु चित्र, सजावटी कला और कलाकृतियां शामिल हैं। भारतीय संग्रहालय, कोलकाता: 1814 में स्थापित भारतीय संग्रहालय भारत का सबसे पुराना और बड़ा संग्रहालय है। इसमें कला और कलाकृतियों का एक विशाल संग्रह है, जिसमें मूर्तियां, पेंटिंग, सिक्के और पुरातात्विक खोज शामिल हैं, जो भारत और अन्य एशियाई देशों की सांस्कृतिक विरासत का प्रतिनिधित्व करते हैं। सरकारी संग्रहालय और आर्ट गैलरी, चंडीगढ़: चंडीगढ़ के इस संग्रहालय में गांधार मूर्तियां, लघु चित्र और समकालीन भारतीय कला, कलाकृतियों का एक विविध संग्रह है। इसमें सिंधु घाटी सभ्यता की कलाकृतियों का एक महत्वपूर्ण संग्रह भी है। जहांगीर आर्ट गैलरी, मुंबई: 1952 में स्थापित, जहांगीर आर्ट गैलरी मुंबई की सबसे प्रमुख कला दीर्घाओं में से एक है। यह उभरते और स्थापित दोनों भारतीय कलाकारों के कार्यों को प्रदर्शित करने वाली नियमित प्रदर्शनियों का आयोजन करता है। इस तरह के कुछ उदाहरण हैं, और पूरे भारत में कई कला संग्रहालय और गैलरी हैं, जिनमें से प्रत्येक देश की कलात्मक विरासत पर एक अद्वितीय परिप्रेक्ष्य पेश करते हैं।

## सालार जंग संग्रहालय की कहानी

हैदराबाद में सालार जंग संग्रहालय एक समृद्ध और आकर्षक इतिहास समेटे हुए है, जो सालार जंग परिवार की विरासत और कला संग्रह के प्रति उनके जुनून से जुड़ा हुआ है। इसकी शुरुआत नवाब मीर यूसुफ अली खान द्वारा संग्रहित एक निजी संग्रह के रूप में हुई, जो सालार जंग III के नाम से लोकप्रिय थे, जिन्होंने 1912 से 1914 तक निज़ाम शासन के तहत हैदराबाद के प्रधान मंत्री के रूप में कार्य किया।

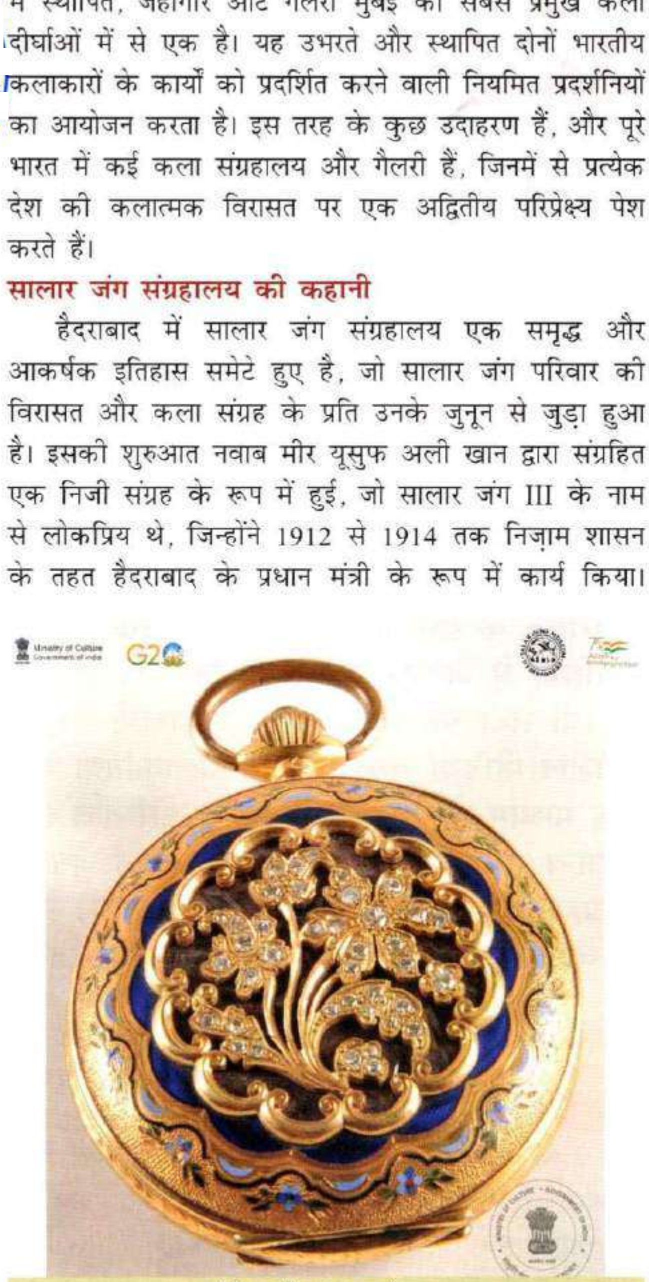


पॉकेट घड़ी, 1895 ए.डी.

सालार जंग III को कला से गहरा प्रेम था, उन्होंने पूरी तल्लीनता से दुनिया भर से अमूल्य वस्तुओं को हासिल करने में 60 वर्षों का कार्यकाल लगाया। उनके एजेंटों ने सक्रिय रूप से यूरोप, भारत, मध्य पूर्व और सुदूर पूर्व में खजाने की खोज की और उन्होंने अपनी यात्राओं के दौरान व्यक्तिगत रूप से यात्राएं कीं और कलाकृतियां भी खरीदीं। वर्ष 1949 में, सालार जंग III के निधन के बाद, उनके विशाल संग्रह को अनिश्चित भविष्य का सामना करना पड़ा। इसके सांस्कृतिक महत्व को पहचानते हुए, उनके परिवार ने उदारतापूर्वक इसे राष्ट्र को दान करने का फैसला किया। दिनांक 16 दिसंबर, 1951 को, सालार जंग संग्रहालय ने आधिकारिक तौर पर सालार जंग III के पैतृक महल 'दीवान देवड़ी' में अपने दरवाजे खोल दिए। जगह की कमी और संरक्षण की चिंताओं के कारण, संग्रहालय 1968 में दार-उल-शिफ़ा में अपने वर्तमान स्थान पर स्थानांतरित हो गया। 1961 के सालार जंग संग्रहालय अधिनियम ने इसे 'राष्ट्रीय महत्व का संस्थान' घोषित किया, जिससे एक प्रमुख सांस्कृतिक खजाने के रूप में इसकी स्थिति मजबूत हो गई। वर्तमान में, इस संग्रहालय में लगभग 46,000 कलाकृतियां हैं, जिनमें मूर्तियां, पेंटिंग, वस्त्र और बहुत कुछ शामिल है, जो विविध संस्कृतियों और युगों का प्रतिनिधित्व करता है। यहां लगभग 69,000 पुस्तकों और 8000 से अधिक पांडुलिपियों का एक पुस्तकालय भी है। यह दुनिया में सबसे बड़े एकल-व्यक्ति संग्रहों में से एक है और भारत में कला प्रेमियों और इतिहास प्रेमियों के लिए आवश्यक रूप से देखने योग्य गंतव्य है। हैदराबाद में सालार जंग संग्रहालय भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के तहत एक स्वायत्त संस्थान है। नई इमारत में यूरोपीय, मुगल और इंडो-इस्लामिक वास्तुकला शैलियों के तत्व हैं। यह संरचना स्वयं कला का एक नमूना है और संग्रहालय देखने के समग्र अनुभव को बेहतर बनाती है।

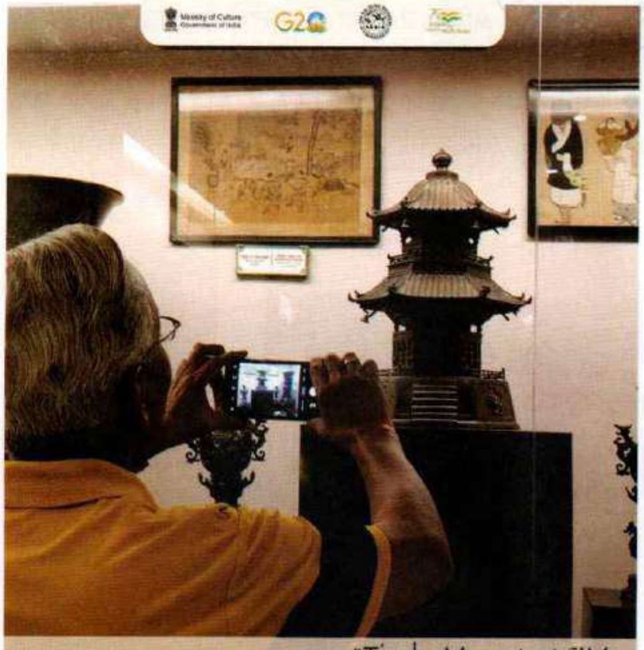


#TimelessMoments at SJM

## कला संग्रहालयों में डिजिटलीकरण का उपयोग

कला संग्रहालय अपने संग्रह को व्यापक दर्शकों के लिए अधिक सुलभ बनाने के लिए डिजिटलीकरण को तेजी से अपना रहे हैं। इसमें कलाकृतियों का डिजिटलीकरण करना, आभासी प्रदर्शनियां बनाना और शिक्षा और आउटरीच के लिए ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म का उपयोग करना शामिल है। डिजिटलीकरण संग्रहालयों को नाजुक वस्तुओं को संरक्षित करने, वैश्विक दर्शकों तक पहुंचने और गहन अनुभवों के लिए नई प्रौद्योगिकियों के साथ जुड़ने की अनुमति देता है। हालांकि, फंडिंग, कॉपीराइट मुद्दे और डिजिटल संरक्षण सुनिश्चित करने जैसी चुनौतियां डिजिटलीकरण के प्रयास करने वाले संग्रहालयों के लिए महत्वपूर्ण सोच-विचार बनी हुई है। हालांकि सालार जंग संग्रहालय ने इस दिशा में बड़े प्रयास किये हैं। सालार जंग संग्रहालय की कलाकृतियों और पुस्तकालय की दुर्लभ पुस्तकों को भी डिजिटल कर दिया गया है। इसकी लाइब्रेरी में आरएफआईडी तकनीक का उपयोग लागू किया गया है। संग्रहालय की व्यापक डिजिटल उपस्थिति है। इसकी वेबसाइट salarjungmuseum.in पर, ऑडियो ऐप, ऑनलाइन टिकट खरीदने और ऑनलाइन प्रदर्शनियों जैसी नई

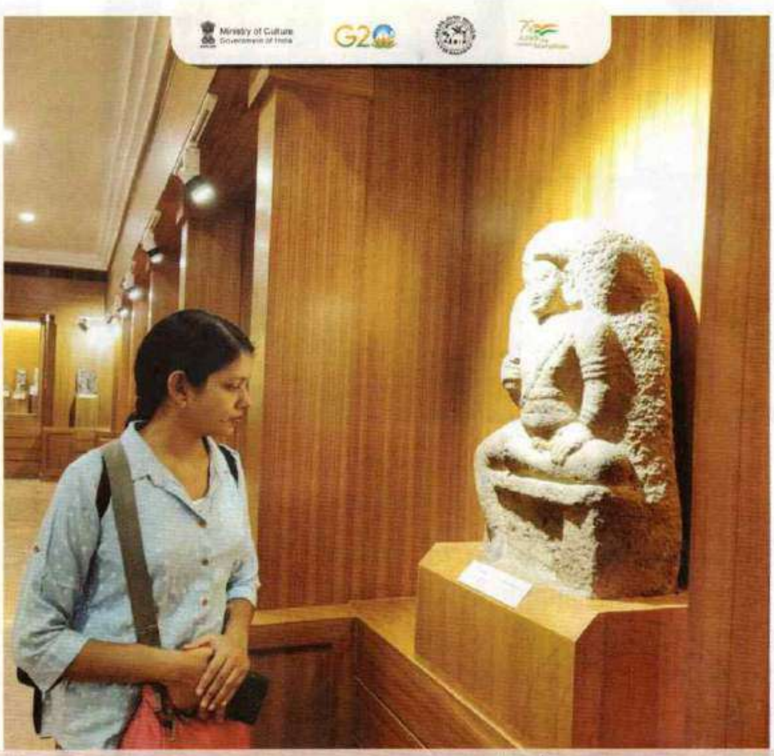

#TimelessMoments at SJM

पहलों के बारे में विवरण दुनिया भर के लोगों में शोध रुचि पैदा करता है। संग्रहालय संग्रह के बारे में 'ऑनलाइन प्रदर्शनियां' एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में काम कर रही हैं जो जनता को परिचित और उत्साहित करती है। वेबसाइट में लाइब्रेरी कैटलॉग भी है। इसके अलावा, सालार जंग संग्रहालय लाइब्रेरी की डिजिटलीकृत पुस्तकें Indianculture.gov.in पर 'दुर्लभ पुस्तकें' और 'ई-पुस्तकें' विकल्पों पर उपलब्ध हैं। संग्रहालय 'गूगल आर्ट्स एण्ड कल्चर ' के साथ एक भागीदार संस्थान है, जिस पर इसकी 52 ऑनलाइन प्रदर्शनियां हैं। यह डिजिटल तकनीक के उपयोग से संभव हुआ है। पोर्टल का लिंक https://artsandculture.google.com/partner/salar-jung-museum है। 'ऑनलाइन प्रदर्शनियां' विषयगत हैं और इसमें वस्तुओं या विषयों के समूहों से संबंधित कहानियां हैं ताकि जनता चलते हुए भी देख सके। ये प्रदर्शनियां कला और संस्कृति के प्रति उत्साही लोगों के लिए रुचिकर हैं जिनके पास समय कम है और वे आसानी से संग्रहालय नहीं जा सकते। यह 'म्यूजियमफ्रॉमहोम' के अनुभव को भी जोड़ता है जो एक अवधारणा है जो कोविड महामारी के कारण उत्पन्न हुई और इसे जारी रखी जा रही है। कुछ प्रदर्शनियां हैं - मैग्निफ़िसेंट जेड्स, हाउ चेस चेंज्ड द वर्ल्ड, पहाड़ी पेंटिंग्स, एपिक्स इन आर्ट, कलर मीट्स साउंड, वुमन इन डेक्कनी पेंटिंग आदि। कोई भी सालार जंग संग्रहालय की सभी कलाकृतियों को छवि और विवरण के साथ museumsofIndia.gov.in पर देख सकता है।

## संग्रहालय और सोशल मीडिया

सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म संग्रहालयों को दर्शकों से जुड़ने, उन्हें नए तरीकों से जोड़ने और उनके शैक्षिक और सांस्कृतिक मिशनों को पूरा करने के लिए शक्तिशाली उपकरण प्रदान करते हैं। आइए इस महत्वपूर्ण संबंध पर गहराई से नज़र डालें:

- **बढ़ी हुई पहुंच और दृश्यता** - सोशल मीडिया, संग्रहालयों को व्यापक दर्शकों तक पहुंचने की अनुमति देता है, जिसमें युवा पीढ़ी, अपने भौगोलिक क्षेत्र से बाहर के लोग और वे लोग शामिल हैं जो आमतौर पर संग्रहालय में जाने पर विचार नहीं करते हैं।
- **बढ़ी हुई सहभागिता** - इंस्टाग्राम, ट्विटर जैसे प्लेटफ़ॉर्म संग्रहालयों को कहानियां, पर्दे के पीछे की झलकियां, शैक्षिक सामग्री और इंटरैक्टिव अनुभव साझा करने में सक्षम बनाते हैं, जिससे आगंतुकों के साथ गहरी सहभागिता को बढ़ावा मिलता है।
- **सामुदायिक भवन** - संग्रहालय, सोशल मीडिया के माध्यम से ऑनलाइन समुदाय बना सकते हैं, बातचीत को बढ़ावा दे सकते हैं, फीडबैक को प्रोत्साहित कर सकते हैं और आगंतुकों के बीच अपनेपन की भावना पैदा कर सकते हैं।
- **घटनाओं का प्रचार** - सोशल मीडिया आगामी घटनाओं, प्रदर्शनियों और कार्यक्रमों को बढ़ावा देने, उपस्थिति और रुचि बढ़ाने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण हैं।

हालांकि, अधिकांश कला संग्रहालयों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है -

1. **प्रतिस्पर्धा** - सोशल मीडिया एक भीड़-भाड़ वाली जगह है, और संग्रहालयों को प्रभावी ढंग से सामने आने की

जरूरत है।

2. **सामग्री निर्माण** - आकर्षक और प्रासंगिक सामग्री की सुसंगत योजना बनाना।
3. **पहुंच** - संग्रहालयों को यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि उनकी सोशल मीडिया उपस्थिति विविध दर्शकों के लिए सुलभ हो और विभिन्न शिक्षण शैलियों की पहुंच संभव बनाए।
4. **प्रभावशीलता को मापना** - सोशल मीडिया प्रयासों के प्रभाव को ट्रैक करने और इसके मूल्य को प्रदर्शित करने के लिए विशिष्ट मैट्रिक्स और विश्लेषण की आवश्यकता होती है।
5. **आभासी उपस्थिति** - संग्रहालय, आभासी पर्यटन और अनुभव प्रदान करने के लिए लाइव वीडियो का तेजी से उपयोग कर रहे हैं, जिससे उनके संग्रह दूरस्थ रूप से पहुंच संभव हो।
6. **सोशल मीडिया प्रभावित करने वाले** - प्रासंगिक प्रभावशाली लोगों के साथ सहयोग होने से पहुंच व्यापक बन सकती है और नए दर्शकों को आकर्षित कर सकती है।
7. **नए मंच** - नए प्लेटफार्मों के बारे में सूचित रहना और तदनुसार रणनीतियों को अपनाना संग्रहालयों के लिए प्रासंगिक बने रहने की कुंजी है।

हैदराबाद के सालार जंग संग्रहालय ने दुनिया भर में कला इतिहास के प्रति उत्साही लोगों के लिए अपने मीडिया हैंडल और पोर्टल के माध्यम से डिजिटल रूप से ऑनलाइन स्थान पाया है।

कला संग्रहालय सांस्कृतिक केंद्र और हॉटस्पॉट के रूप में काम करते हैं जहां आगंतुक क्यूरेटेड प्रदर्शनियों, व्याख्यान, कार्यशालाओं और विशेष कार्यक्रमों जैसे शैक्षिक कार्यक्रमों के माध्यम से कला, इतिहास और विभिन्न संस्कृतियों के साथ जुड़ सकते हैं और सीख सकते हैं। वे सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने, रचनात्मकता को बढ़ावा देने, नए विचारों का पोषण करने और विविध समुदायों के बीच संवाद और समझ को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ❑

*(चित्रों का स्रोत : सालार जंग संग्रहालय, संस्कृति मंत्रालय)*


## प्रकाशन विभाग के विक्रय केंद्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| नई दिल्ली | पुस्तक दीर्घा, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड | 110003 | 011-24367260 |
| नवी मुंबई | 701, सी-विंग, केन्द्रीय सदन, बेलापुर | 400614 | 022-27570686 |
| कोलकाता | 8, एस्प्लेनेड ईस्ट | 700069 | 033-22488030 |
| चेन्नई | 'ए' विंग, राजाजी भवन, बसंत नगर | 600090 | 044-24917673 |
| तिरुवनंतपुरम | प्रेस रोड, गवर्नमेंट प्रेस के निकट | 695001 | 0471-2330650 |
| हैदराबाद | कमरा सं. 204, दूसरा तल, सीजीओ टावर, कवाड़ीगुड़ा, सिकंदराबाद | 500080 | 040-27535383 |
| बेंगलुरू | फर्स्ट फ्लोर, 'एफ' विंग, केंद्रीय सदन, कोरामंगला | 560034 | 080-25537244 |
| पटना | बिहार राज्य कोऑपरेटिव बैंक भवन, अशोक राजपथ | 800004 | 0612-2675823 |
| लखनऊ | हॉल सं-1, दूसरा तल, केंद्रीय भवन, सेक्टर-एच, अलीगंज | 226024 | 0522-2325455 |

# स्ट्रीट आर्ट

लोधी आर्ट डिस्ट्रिक्ट, भारतीय और अंतरराष्ट्रीय कलाकारों द्वारा भित्तिचित्रों वाला भारत का पहला आर्ट डिस्ट्रिक्ट

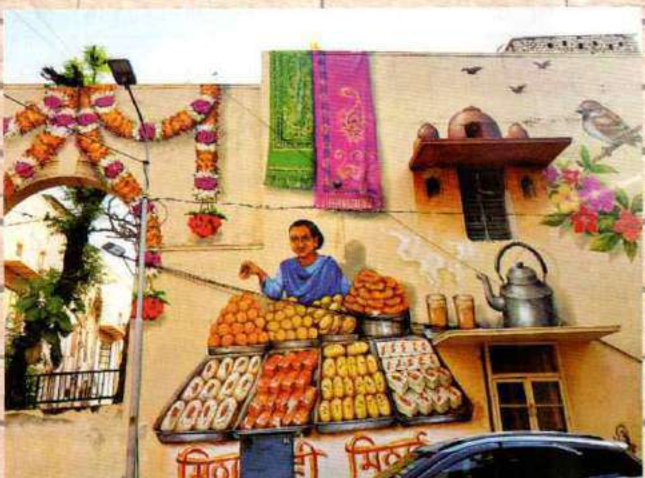

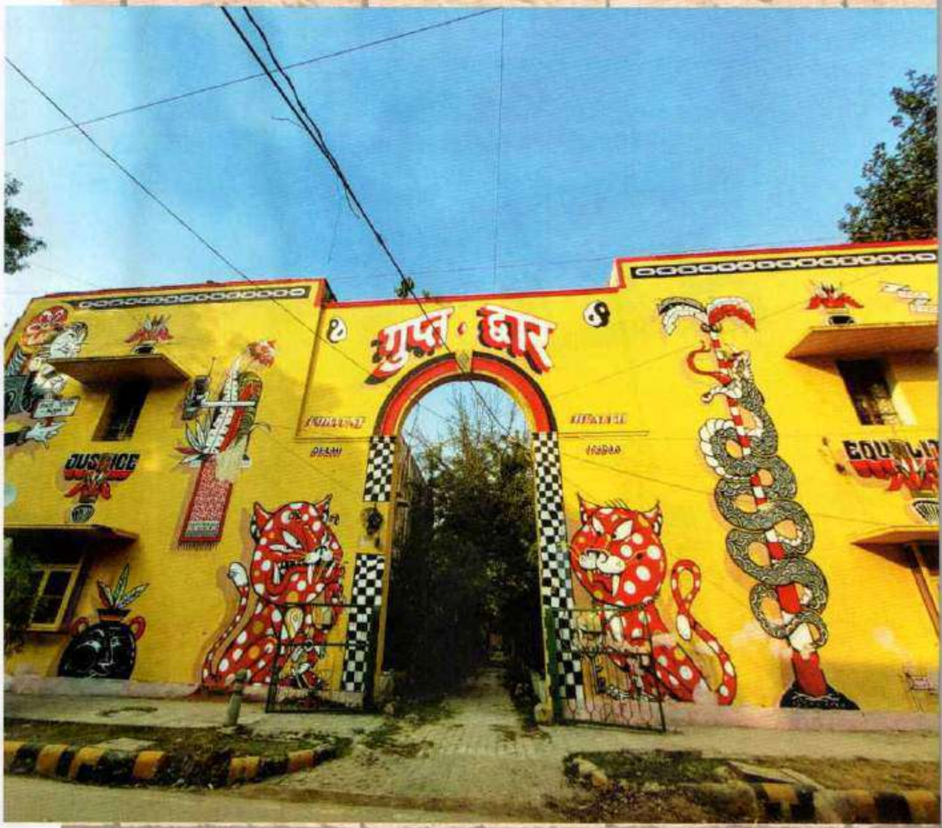
JUSTICE

दिल्ली के श्रीनिवासपुरी में एक स्कूल के गलियारे में स्थित चित्रकारी

वाराणसी की सड़कों का दृश्य

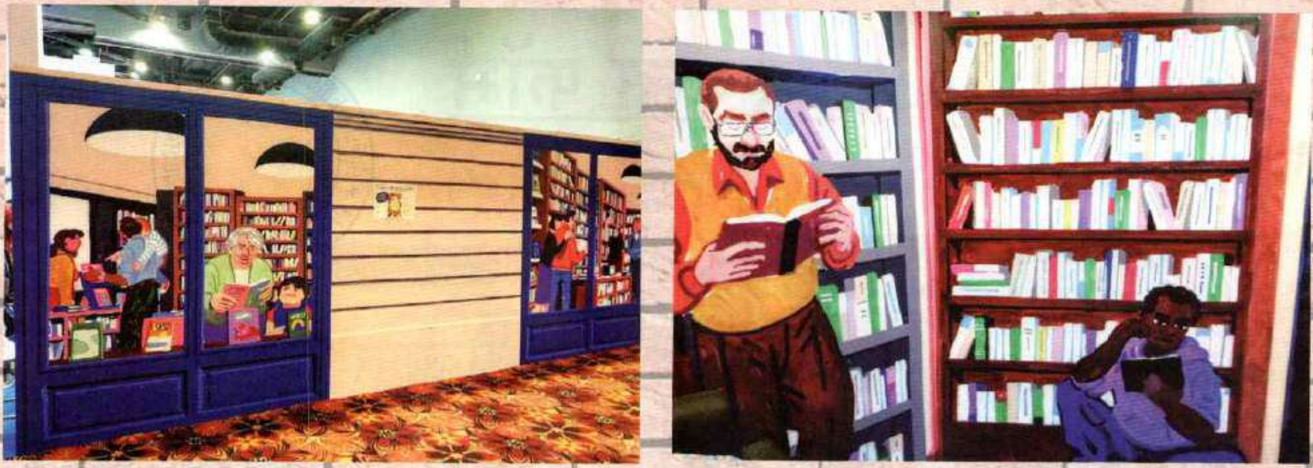

दिल्ली पुस्तक मेले में पुस्तकों से सुसज्जित एक कोना

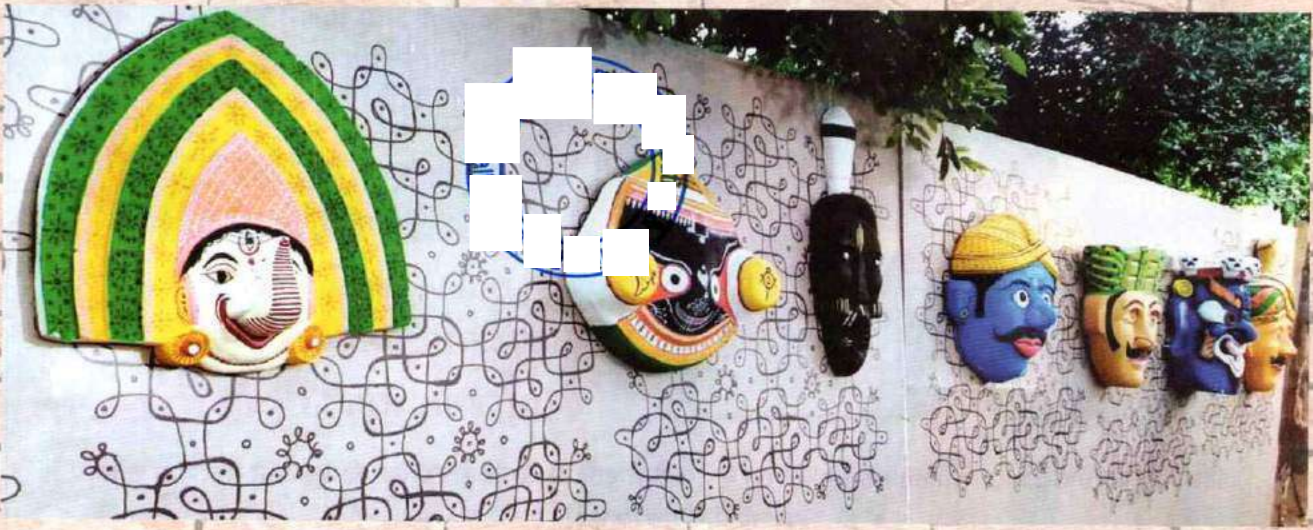

एक कला उत्सव के मुखौटे

शहर की गलियों में बनारस की बुनाई साड़ियां

(सभी चित्र: शुचिता चतुर्वेदी)

# सदस्यता फॉर्म

## उपयुक्त विकल्प चुनें (✔)

**प्रिंट संस्करण के प्लान**

| | |
|---|---|
| 6 माह | रु. 265/- ( ) |
| 1 वर्ष | रु. 530/- ( ) |
| 2 वर्ष | रु. 1000/- ( ) |
| 3 वर्ष | रु. 1400/- ( ) |

**ई-संस्करण के प्लान**

| | |
|---|---|
| 6 माह | रु. 200/- ( ) |
| 1 वर्ष | रु. 400/- ( ) |
| 2 वर्ष | रु.750/- ( ) |
| 3 वर्ष | रु. 1050/- ( ) |

रोज़गार समाचार
'महत्वपूर्ण खनिज' मिशन से आत्मनिर्भरता एवं आर्थिक विकास

( ) Employment News

( ) रोज़गार समाचार (हिन्दी)

( ) रोज़गार समाचार (उर्दू)

**डिमांड ड्राफ्ट/चेक 'Employment News' के पक्ष में देय होना चाहिए। डिमांड ड्राफ्ट/चेक की मूल प्रति सदस्यता फॉर्म के साथ संलग्न करें।**

फॉर्म में सभी विवरण स्पष्ट अक्षरों में दर्ज करें

नाम :______________________________

डाक पता :______________________________

______________________________ पिन ____________

दूरभाष/मोबाइल : ____________ ईमेल : ____________

**ऑनलाइन भुगतान की सुविधा दोनों प्लान के लिए उपलब्ध।**

**स्कैन और भुगतान**

**सदस्यता फॉर्म यहाँ भेजें :-**

**रोज़गार समाचार, कक्ष संख्या - 783,**
**7वां तल, सूचना भवन, लोधी रोड,**
**नई दिल्ली-110003**

**ताजा जानकारियों के लिए देखें :-**

**www.employmentnews.gov.in/ www.rozgarsamachar.gov.in**

@Employ_News   @EmploymentNews   www.eneversion.nic.in

# कथा कॉमिक्स की

**अंशुमाली झा** | पटकथा लेखन की एक कंपनी 'स्क्रिप्टवाला' के फाउंडर, निर्देशक एवं पिछले 30 सालों से टेलीविजन के विभिन्न चैनलों हेतु विज्ञापनों और कई ब्रांड्स के लिए कार्य किया है। ईमेल: anshumali@scriptwalla.com

भारत में कॉमिक्स की ऐसी लोकप्रियता की नींव 20वीं सदी के पूर्वार्द्ध में सुकुमार राय अपनी बाल पत्रिका 'संदेश' में रख चुके थे। पश्चिम बंगाल के प्रख्यात फिल्म निर्माता निर्देशक सत्यजित राय के पिता सुकुमार राय के द्वारा बनाई और प्रकाशित 'करुणामोई रानी रशमोणि' कॉमिक स्ट्रिप को अक्सर भारत के पहले कॉमिक स्ट्रिप का मान दिया जाता है।

किन्तु चित्रों के साथ शब्दों को मिलाकर संवाद या कथाकारी की ये परंपरा शुरू कैसे हुई? इसका कोई ऐतिहासिक दस्तावेज तो नहीं मिलता, पर ऐसा माना जाता है कि मानव प्रजाति के साथ-साथ इसका भी कालक्रम में विकास हुआ है।

अपनी अभिव्यक्ति को, अपनी कहानियों को जब मूर्त करने की आवश्यकता पड़ी, तो इंसान ने भित्तिचित्र, पात चित्र, धातु, पत्थर, काष्ठ पर अपनी कला को उकेरना शुरू किया और उसे अधिक प्रभावशाली बनाने का नया माध्यम नयी तकनीक भी ढूंढता रहा। 16वीं सदी के शुरुआती दिनों में इटली के पॉलीमैथ, महान चित्रकार, आविष्कारक, संगीतकार लियोनार्दो दा विंची (Leonardo da Vinci) एक दिन एक सिक्के को देख रहे थे, उसमें किसी राजा के चेहरे की छवि उकेरी गई थी। घिसने के कारण या दरार पड़ने के कारण वो चेहरा ज्यादा दिलचस्प, ज्यादा असरदार लग रहा था। उनके कौतूहल ने उन्हें जीर्ण सिक्कों पर विकृत हो रहे चेहरों का अध्ययन कराया। उसके बाद उन्होंने अपनी पेंटिंग में चेहरों को

# कॉमिक्स कैसे कैसे

**कार्टूनः** चित्रकला की वो विधा है जिसमें मजेदार तरीके से किसी भी बात का, विषय का, व्यक्ति का, परिवेश का चित्रण किया जाता है और उसे असरदार बनाने के लिए कुछ शब्दों का भी प्रयोग किया जाता है। कार्टून का इस्तेमाल कभी कथा कहने के लिए, मनोरंजन के लिए, हास्य व्यंग्य के लिए तो कभी राजनीतिक और सामाजिक कॉमेंट्री के लिए किया जाता है। कार्टून कई बार हंसते हंसाते कई ऐसे अनछुए अनकहे सच को उजागर कर देता है जो आमतौर पर लोग कहने से हिचकिचाते हैं।

**विदेशी कार्टूनः** मिकी माउस, डोनल्ड डक, मोग्ली, टॉम एण्ड जेरी, ही-मैन, फैंटम, मैन्ड्रैक, सुपर-मैन, बैट्मैन, स्पाइडर मैन, आर्चीज़ इत्यादि।

**भारतीय कार्टूनः** चाचा चौधरी, साबू, ढब्बू जी, बिल्लू, नागराज, चीटू-नीटू, चीकू, मोटू-पतलू इत्यादि।

**जापानी कार्टूनः** पोकेमोन, डोरेमोन, डेथ नोट, शिनचैन, नारुतो इत्यादि।

**कैरिकेचरः** कार्टून की शैली में ही जब किसी व्यक्ति या वस्तु के किसी अंग या हिस्से का अतिरेक होता है या ऐसा विकृत किया जाता है, हास्य या व्यंग्य का प्रभाव उत्पन्न करने के लिए तो उसे कैरिकेचर कहते हैं। इसमें किसी व्यक्तित्व की किसी विशेषता, गुण या लक्षण को अत्यधिक बढ़ा के मजेदार या मनोरंजक बना दिया जाता है। आमतौर पर नाक, आंख, होंठ, कान और बाल ही किसी कैरिकेचर का शिकार बनता है। कैरिकेचर का उद्देश्य आमतौर पर विषय की प्रमुख विशेषताओं, विचित्रताओं, या विषमताओं को उजागर करना होता है।

**कॉमिक्सः** कॉमिक्स वो कला है जिसमें कहानियों, चरित्रों, और घटनाओं को कार्टून की ही तरह रेखांकन, चित्रकारी और शब्दों के संयोजन से प्रस्तुत किया जाता है। कॉमिक्स में एक ही किरदार के किस्से को छोटे-छोटे खण्डों में विभाजित किया जाता है, जिन्हें 'पैनल' कहते हैं, और ये पैनल संदर्भ, समय और आवश्यकतानुसार किरदार के साथ घटनेवाली घटना और भावों को दर्शाते हैं। कॉमिक्स के कई प्रकार हैं सुपरहीरो कॉमिक्सः ऐसी कॉमिक बुक्स जिनमें असाधारण क्षमताओं और पोशाकों वाले पात्र होते हैं, जो बुराई और अन्याय के खिलाफ लड़ते हैं। उदाहरणः सुपरमैन, स्पाइडर-मैन, बैटमैन, वंडर वुमन आदि।

**विज्ञान कथा और काल्पनिक कॉमिक्सः** ऐसी कॉमिक बुक्स जो कल्पनाशील और भविष्यवाणी स्थितियों का अन्वेषण करती हैं, जैसे अंतरिक्ष यात्रा, एलियन आक्रमण, जादू, और वैकल्पिक वास्तविकताएं। उदाहरणः स्टार वॉर्स, द वॉकिंग डेड, सागा, सैंडमैन आदि।

**हॉरर कॉमिक्सः** ऐसी कॉमिक बुक्स जो भूत-प्रेत, राक्षस, पिशाच, ज़ोंबी, जैसे भयानक और हिंसक विषयों पर बनाई जाती हैं। उदाहरणः द वॉकिंग डेड, हेलबॉय, लॉक एंड की, ब्लैक होल आदि।

**हास्य कॉमिक्सः** ऐसी कॉमिक बुक्स जो हास्य और व्यंग्य का उपयोग करके पाठकों को मनोरंजन करती हैं, अक्सर अतिरंजित, बेतुकी स्थितियों और पात्रों की कथा कहती हैं। उदाहरणः पीनट्स, गारफील्ड, कैल्विन और होब्स, द सिम्पसन्स आदि।

**रोमांस कॉमिक्सः** ऐसी कॉमिक बुक्स जो पात्रों के संबंधों और भावनाओं पर केंद्रित होती हैं। इनमें अधिकतर चाहत, मुहब्बत, बेवफाई, मिलन, जुदाई, दोस्ती की कहानियां होती हैं। उदाहरणः आर्ची, स्ट्रेंजर्स इन पैराडाइस, स्कॉट पिलग्रिम, ब्लैंकेट्स आदि।

**बाल कॉमिक्सः** ऐसी कॉमिक बुक्स जो बाल और किशोर पाठकों के लिए बड़े ही रोचक, आकर्षक और प्यारे पात्रों की सरल और मजेदार कहानियां कहती हैं और नैतिक शिक्षा, सबक भी देती हैं।

**उदाहरणः** अमरचित्र कथा, टिनटिन, एस्टेरिक्स आदि।

**वयस्क कॉमिक्सः** ऐसी कॉमिक बुक्स जो परिपक्व और वयस्क पाठकों के लिए बनायी जाती हैं, इसमें अक्सर सेक्स, हिंसा, नशा, अपराध, जासूसी जैसे विषयों की भरमार होती है उदाहरणः वॉचमेन, वी फॉर वेंडाटा, सिन सिटी, माउस आदि।

**मांगा कॉमिक्सः** ऐसी कॉमिक बुक्स जो जापान से उत्पन्न हुई हैं, और एक विशिष्ट शैली और संस्कृति से ताल्लुक रखती हैं। मांगा कॉमिक्स विभिन्न शैलियों और विषयों को कवर करती हैं और बड़ी ही लोकप्रिय हैं। उदाहरणः नारुतो, वन पीस, ड्रैगन बॉल, डेथ नोट आदि।

इसके अलावा भी एनिमे कॉमिक्स, वैकल्पिक कॉमिक्स जैसे कई प्रकार के कॉमिक्स बाजार में उपलब्ध हैं। इनमें से कुछ स्व-प्रकाशित भी हैं। ❑

विकृत करके अधिक प्रभावशाली बनाने का प्रयोग शुरू किया। यही कार्टून कैरिकेचर, कॉमिक्स जैसी कला का उद्‌गम या प्रेरक बिन्दु माना जाता है।

1560 के दौर में एक इतालवी चित्रकार ग्यूसेप आर्किबोल्डो (Giuseppe Arcimboldo) ने फूलों, सब्जियों, फलों, मुर्गी, मछली, किताबों जैसी चीजों के चित्रों से अपनी आकृतियां गढ़ना शुरू किया। दूर से उनकी पेंटिंग, अपनी आकृतियां सामान्य लगती थीं, पर करीब जाने पर पता चलता कि नाक तो एक सब्जी है और गाल तो एक फल है। उनकी इस कल्पना, उनके अंदाज ने आनेवाले दिनों में साहित्य और कला

को प्रभावित किया। इसे भी कार्टून कला और कॉमिक स्ट्रिप्स का प्रस्थान बिन्दु माना जाता है। 16वीं सदी के अंत और 17वीं सदी के आरंभ में इतालवी कलाकार एनिबेल कैराची (Annibale Carracci) ने पोर्ट्रेट बनाने की विधा को नया आयाम दिया, जिसे तब दुनिया कैरिकेचर के नाम से जानती थी और आज वो कैरिकेचर के रूप में प्रसिद्ध है।

18वीं सदी की शुरुआत तक कार्टून और कैरिकेचर की ये कला पूरे यूरोप में अपनी जड़ें जमा चुकी थी। 19वीं सदी के पूर्वार्द्ध में एक स्विस कैरिकेचर आर्टिस्ट, रोडोल्फ टॉपफर ने 'द ऐडवेंचर्स ऑफ मिस्टर ऑबडियाह ओल्डबक' प्रकाशित किया, जिसे आज भी कॉमिक्स के इतिहास में बड़ा ही अहम दर्जा दिया जाता है। जब उन्होंने 1827 में उन्होंने इस पर काम करना शुरू किया, तब इससे जुड़ी उनकी कोई महत्वाकांक्षा नहीं थी, उन्होंने तो ये अपने करीबी दोस्तों के मनोरंजन बनाना शुरू किया था, उन्हें क्या पता था कि एक दिन ये कला की अलग विधा बन कर इतनी प्रसिद्ध हो जाएगी। सन् 1841 में हास्य और व्यंग्य की एक पत्रिका का प्रकाशन शुरू हुआ। कहते हैं लंदन की इस पत्रिका में पहली बार कार्टून शब्द का प्रयोग हुआ और धीरे-धीरे ये कार्टूनों की विश्व प्रसिद्ध पत्रिका बन गयी। 1895 में रिचर्ड एफ औटकल्ट के 'द येलो किड' और उसके बाद 'बस्टर ब्राउन' के कार्टून स्ट्रिप्स का प्रकाशन शुरू हुआ। उनके इस योगदान के लिए उन्हें मॉडर्न कॉमिक्स का जनक माना जाता है।

यूं तो छिट-पुट रूप से कार्टून की संस्कृति भारत पहुंच गई थी, किन्तु कार्टून की शुरुआत का लैंडमार्क 1930 को माना जाता है जब युवा शंकर पिल्लै ने अपने कार्टूनों से मुंबई में धूम मचा दी थी। देश गुलाम था और उनके कार्टून ब्रिटिश हुकूमत पर तंज कसते थे। मुंबई के 'बॉम्बे क्रॉनिकल' में छपने वाले उनके कार्टूनों की दीवानगी बढ़ती ही जा रही थी। मुंबई से निकल कर उनकी लोकप्रियता देश के दूसरे हिस्से में पहुंचने लगी थी। 1948 में उन्होंने 'शंकर्स वीकली' नाम की एक पत्रिका भी शुरू की।

1930 से 1950 के दशक के बीच, विदेशों में सुपरमैन, बैटमैन और वंडर वुमन जैसे सुपरहीरो का जन्म हुआ, जिन्होंने कॉमिक्स को एक अलग मकाम दिया। इसी दौर में मार्वेल कॉमिक्स का उदय हुआ, जिसने आने वाले वर्षों में स्पाइडर-मैन, द एक्स मैन, आयरन मैन, ब्लैक पैंथर, एंट-मैन, डॉक्टर स्ट्रेंज, डेडपूल, हल्क, थॉर, कैप्टन मार्वेल कैप्टन अमेरिका और द ह्यूमन टॉर्च जैसे पात्रों से दुनिया का परिचय कराया। 1939 में जिस शख्स ने 'मार्वल कॉमिक्स' की स्थापना

की वे थे मार्टिन गुडमैन।

अब तक भारत के अखबारों में कार्टून और कॉमिक स्ट्रिप्स छपने लगे थे। 1947 में बी. नागी रेड्डी और चक्रपाणी ने एक मासिक पत्रिका 'चंदामामा' का प्रकाशन शुरू किया। इसमें कॉमिक स्ट्रिप के रूप में भारतीय पौराणिक, लोककथा और ऐतिहासिक कहानियां प्रकाशित होने लगीं।

वर्ष 1960 के दशक में, जब ली फाल्क द्वारा बनाई गई द फैंटम कॉमिक स्ट्रिप भारत में बहुत प्रसिद्ध हो गई, तो उसका कॉपीराइट लेकर अनंत पई और कुछ अन्य लोगों ने इन्हें कॉमिक बुक के रूप में 1964 में प्रकाशित करना शुरू किया। इसका नाम रखा 'इंद्रजाल कॉमिक्स'। द फैंटम बना वेताल और उसकी कहानियों को इस फॉर्मेट में फिट करने के लिए संपादित किया गया, फैंटम और उसकी प्रेमिका डायना के चुंबन सीन को निकाल दिया गया। इसके बाद तो इंद्रजाल कॉमिक्स ने मैंड्रेक, फ्लैश गॉर्डन, रिप किरबी, गार्थ जैसे किरदारों को छाप-छाप कर पूरे भारत का चहेता बन गया। पर इंद्रजाल कॉमिक्स के बाद एक और किरदार था बहादुर, जो भारतीय था। उन्हें जन्म दिया था कार्टूनिस्ट और लेखक आबिद सुरती ने जो धर्मयुग नाम की पत्रिका में छपने वाले अपने कार्टून स्ट्रिप 'कार्टून कोना ढब्बू जी' के लिए काफी मशहूर थे।

इसी बीच 1967 में एक बड़ा ही दिलचस्प वाकया हुआ, जिसने भारतीय कॉमिक्स की दुनिया में क्रांति की नींव रखी। अनंत पई दूरदर्शन पर एक क्विज़ शो देख रहे थे, जिसमें भाग लेने वाले बच्चे ग्रीक पौराणिक कथाओं से संबंधित प्रश्नों का आसानी से उत्तर दे रहे थे, लेकिन वे अपने इतिहास, पौराणिक कथाओं और लोककथाओं से संबंधित प्रश्नों का जवाब नहीं दे पा रहे थे। उनकी हैरानी की सीमा नहीं रही। इसका नतीजा ये हुआ की अनंत पई ने इंद्रजाल कॉमिक्स छोड़ दिया, तय किया कि वे भारत की पौराणिक, ऐतिहासिक, धार्मिक और लोक कथाओं का एक कॉमिक्स शुरू करेंगे। और इस तरह जन्म हुआ 'अमर चित्र कथा' का। अमर चित्र कथा में छपी पहली भारतीय कॉमिक कृष्ण की थी और 1970 के दशक के अंत तक, इसकी लगभग 50 लाख कॉपियां प्रति वर्ष बिकती थीं और एक महीने में लगभग 700,000 उच्चतम वितरण संख्या भी इसने हासिल की थी।

विदेशों में अपना बड़ा फैन बेस बनाने के बाद 1970 और 1980 के दशक में आर्ची कॉमिक्स ने भारत में अपनी जड़ें जमा ली। आर्ची कॉमिक्स ने शहरी युवाओं को अमेरिकी जीवनशैली, हास्य और रोमांस से मिलाया, और उनके पॉप कल्चर का हिस्सा बन गया। इसने न सिर्फ आगामी टीवी शो और फिल्मों को प्रभावित किया, बल्कि इसपर हाल में एक फिल्म भी बन गई।

पिछले छह दशकों के दौरान डायमंड कॉमिक्स, राज कॉमिक्स, टिंकल और अमर चित्र कथा ने विशाल वितरण नेटवर्क की स्थापना की है और ये देशभर में लाखों बच्चों द्वारा विभिन्न भाषाओं में पढ़े जाते हैं। भारतीय प्रसिद्ध कॉमिक निर्माताओं में प्रताप मलिक, चंदू, हरविंदर मनकार, सुखवंत कलसी, अनुपम सिन्हा, आबिद सुरती, अंकल पई, कार्टूनिस्ट प्राण, नीरद जैसी अन्य कई शख्सियत शरीक हैं। और प्रसिद्ध कार्टून कैरक्टरों की बात करें तो चाचा चौधरी, बहादुर, चीकू, मोटू पतलू, नागराज, सुपर कमांडो ध्रुव, डोगा, सुप्पंडी, बिल्लू और भी कई शामिल हैं। 'अंकल पई' के रूप में प्रसिद्ध अनंत पई के अमर चित्र कथा कॉमिक्स की पॉपुलरिटी का ये आलम है कि हाल ही में उसके विडिओ राइट्स करोड़ों में एक कंपनी ने खरीदे हैं।

20वीं सदी में कॉमिक्स की पॉपुलरिटी के दौरान ग्राफिक नॉवेल/उपन्यास का भी प्रचलन शुरू हुआ। ये कॉमिक्स की तरह कम पन्नों की नहीं होती है। ऐसा माना जाता है कि कॉमिक्स के पाठक बच्चे और किशोर वय के होते हैं, मगर ग्राफिक नॉवेल परिपक्व दर्शकों के लिए प्रकाशित की जाती है गंभीर साहित्यिक विषयों और परिष्कृत कलाकृति के साथ।

1990 के दशक में टेलीविजन की बढ़ती लोकप्रियता और वीडियो गेम्स के आगमन के कारण भारत में कॉमिक बुक्स का प्रचलन कम होने लगा। कई कॉमिक्स बंद हो गए पर कुछ प्रकाशकों ने कॉमिक बुक्स बनाना और वितरित करना जारी रखा, जिनमें नए और पुराने पात्र थे, जैसे डोगा, सुपर कमांडो ध्रुव, शक्ति और तंत्री द मंत्री। ये कॉमिक बुक्स मुख्य रूप से हिंदी और अंग्रेजी में उपलब्ध थीं, एक निश्चित बाजार को लक्षित करती थीं।

2000 के बाद भारत में आई इंटरनेट क्रांति ने कॉमिक बुक्स और ग्राफिक नॉवेल्स को पुनर्जीवन दिया कई स्वतंत्र और वैकल्पिक कॉमिक बुक निर्माता उभरने लगे, विविध और समकालीन विषयों जैसे सामाजिक न्याय, सेक्सुअलिटी, का उदय हुआ। कॉमिक बुक्स और ग्राफिक नॉवेल्स अंग्रेजी और अन्य भाषाओं, हिंदी, उर्दू और बंगाली में ऑनलाइन वेबसाइट पर प्रकाशित और उपलब्ध होने लगे। स्वयं प्रकाशित करने का भी विकल्प मिल गया। आर्टिफ़िशियल इन्टेलिजेन्स भी इस कला को एक अलग मकाम तक ले जाने का वादा कर रहा है। पिछले दो तीन दशकों में इन कॉमिक बुक्स किरदारों पर बनी फिल्मों ने बहुत मुनाफा कमाया है। यही वजह है कि पिछले कुछ वर्षों में ग्लोबल कॉमिक बुक बाजार का आकार बढ़ता ही जा रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि 2023 में 16.05 अरब डॉलर की ये इंडस्ट्री बढ़कर 2030 तक 22.37 अरब डॉलर की हो जाएगी। आज विश्व को इंतज़ार है नये कॉमिक किरदारों का सुपरहीरो का जो इस कल्पना को अंजाम दे सके। ❑

पुस्तक चर्चा

# सेवन्टी फाइव ईयर्स सेवन्टी फाइव फिल्म्स

## इंडियाज़ सिनमैटिक जर्नी

लेखक : अमिताव नाग

मूल्य : ₹ 820, भाषा : अंग्रेजी

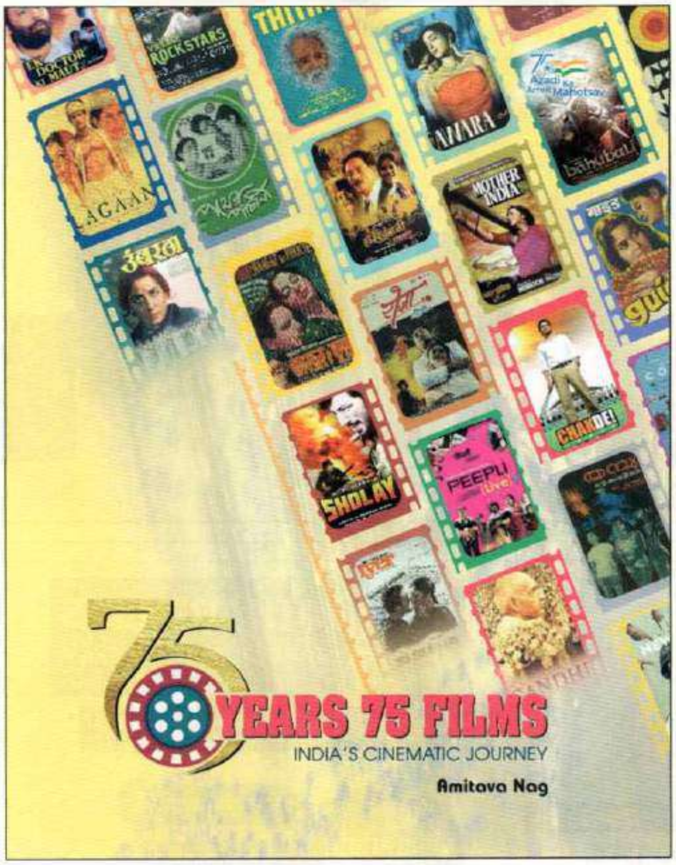


भारतीय सिनेमा ने पचहत्तर वर्ष पहले, जीवन से बाहर और सृजनात्मक गतिविधियों के माध्यम से परंपरा और आधुनिकता के बीच, नए अर्थ निकालने के लिए सीमाओं को पार कर लिया। पचहत्तर वर्ष बाद, भारतीय सिनेमा जीवन के उत्तर-आधुनिक दृष्टिकोण को पार करने की कगार पर है। इस पुस्तक का उद्देश्य पिछले सात दशकों में पचहत्तर फिल्मों की छानबीन करके, भारत की सामाजिक-राजनीतिक स्थिति में बदलाव को प्रतिबिंबित करना है जैसा कि इसके काल्पनिक सिनेमा में परिलक्षित होता है। ❑

राष्ट्रपतियों तथा प्रधानमंत्रियों के भाषण, भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, भूमि तथा लोग, कला एवं संस्कृति, वनस्पतियां तथा जीव, गांधीवादी साहित्य, जीवनियां तथा भाषण, विज्ञान और बच्चों का साहित्य सहित राष्ट्रीय महत्व के विभिन्न विषयों पर प्रकाश डालने वाले प्रकाशनों की एक विस्तृत शृंखला खरीदने के लिए देखें वेबसाइट- www.publicationsdivision.nic.in

# हमारी पत्रिकाएं

**योजना**
विकास को समर्पित मासिक
(हिंदी, अंग्रेज़ी, उर्दू व 10 अन्य भारतीय भाषाओं में)

**प्रकाशन विभाग**
सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

**कुरुक्षेत्र**
ग्रामीण विकास पर मासिक
(हिंदी और अंग्रेज़ी)

**आजकल**
साहित्य एवं संस्कृति का मासिक
(हिंदी तथा उर्दू)

**बाल भारती**
बच्चों की मासिक पत्रिका
(हिंदी)

## घर पर हमारी पत्रिकाएं मंगाना है काफी आसान...

आपको सिर्फ नीचे दिए गए 'भारत कोष' के लिंक पर जा कर पत्रिका के लिए ऑनलाइन डिजिटल भुगतान करना है-
https://bharatkosh.gov.in/Product/Product

### सदस्यता दरें

| प्लान | योजना या कुरुक्षेत्र या आजकल | | बाल भारती | |
|---|---|---|---|---|
| वर्ष | साधारण डाक | ट्रैकिंग सुविधा के साथ | साधारण डाक | ट्रैकिंग सुविधा के साथ |
| 1 | ₹ 230 | ₹ 434 | ₹ 160 | ₹ 364 |

ऑनलाइन के अलावा आप डाक द्वारा डिमांड ड्राफ्ट, भारतीय पोस्टल आर्डर या मनीआर्डर से भी प्लान के अनुसार निर्धारित राशि भेज सकते हैं। डिमांड ड्राफ्ट, भारतीय पोस्टल ऑडर या मनीआर्डर '**अपर महानिदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय**" के पक्ष में **नई दिल्ली** में देय होना चाहिए।

अपने डीडी, पोस्टल आर्डर या मनीआर्डर के साथ नीचे दिया गया "सदस्यता कूपन" या उसकी फोटो कॉपी में सभी विवरण भरकर हमें भेजें। भेजने का पता है-
**संपादक, पत्रिका एकांश, प्रकाशन विभाग, कक्ष सं. 779, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003**

अधिक जानकारी के लिए ईमेल करें- pdjucir@gmail.com

हमसे संपर्क करें- **फोन : 011-24367453** (सोमवार से शुक्रवार सभी कार्य दिवस पर प्रात: साढ़े नौ बजे से शाम छह बजे तक)

**कृपया नोट करें कि सदस्यता शुल्क प्राप्त होने के बाद सदस्यता शुरू होने में कम से कम आठ सप्ताह लगते हैं। कृपया इतने समय प्रतीक्षा करें और पत्रिका न मिलने की शिकायत इस अवधि के बाद करें।**

## सदस्यता कूपन ( नई सदस्यता/नवीकरण/पते में परिवर्तन )

कृपया मुझे 1 वर्ष के प्लान के तहत ................................................ पत्रिका .................. भाषा में भेजें।

नाम ( साफ व बड़े अक्षरों में ) ........................................................................................

पता : ........................................................................................................

.................................................. ज़िला ........................................ पिन ....................

ईमेल ........................................................................ मोबाइल नं. ........................................

डीडी/पीओ/एमओ सं. ................................................ दिनांक .................... सदस्यता सं. ....................

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

अब उपलब्ध

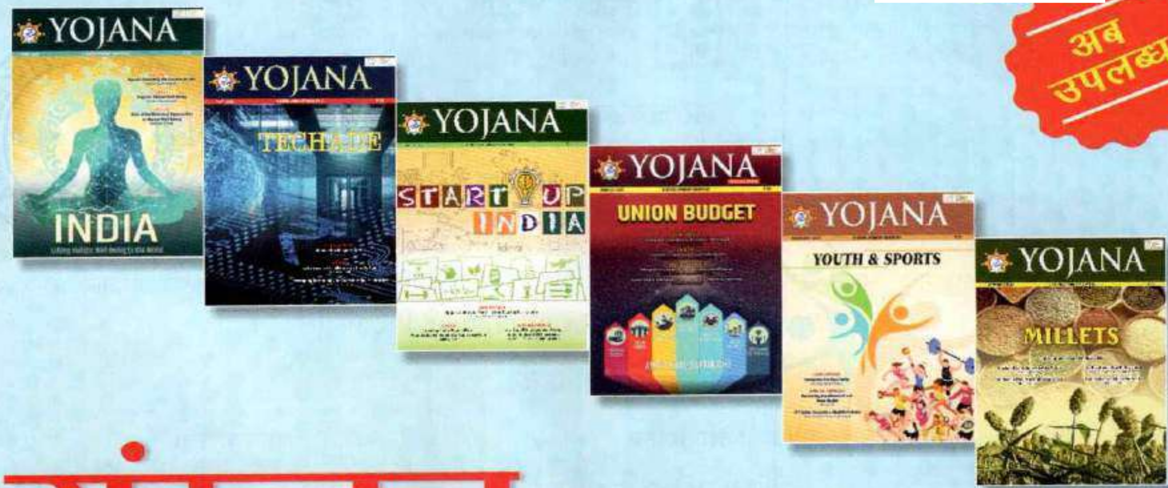


# संकलन 2023

योजना (अंग्रेजी)

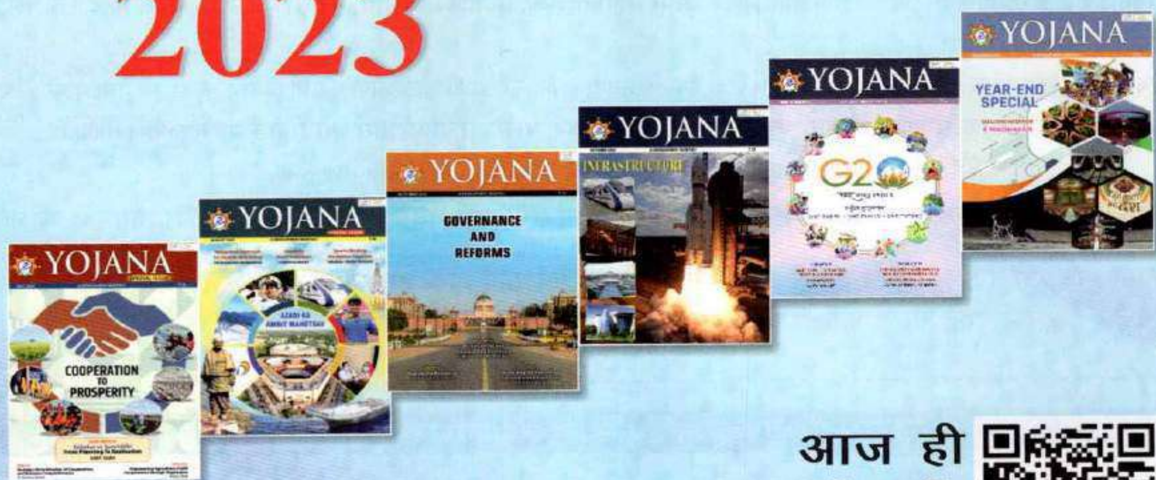


जनवरी से दिसंबर 2023
मूल्य : ₹300/-

आज ही अपनी प्रति बुक करें

संकलन ऑनलाइन खरीदने के लिए कृपया www.bharatkosh.gov.in पर जाएं।
ऑर्डर के लिए कृपया संपर्क करें : फोन : 011-24365609, ईमेल : businesswng@gmail.com
वेबसाइट : www.publicationsdivision.nic.in

EmploymentNews | publicationsdivision | dpd_india | DPD_India | YojanaJournal | Employ_News

# भारत की कलात्मक विरासत का संरक्षण

### राष्ट्रीय संग्रहालयः भारत की बहुमुखी विरासत का संरक्षक

राष्ट्रीय संग्रहालय भारत के 5,000 वर्षों से अधिक की कला और कलाकृतियों के इतिहास संबंधी भंडार के रूप में खड़ा है। मूर्तियों, चित्रों, पांडुलिपियों, सिक्कों, हथियारों और वस्त्रों सहित 210,000 से अधिक वस्तुओं के संग्रह के साथ, यह भारत की विविध सांस्कृतिक विरासत के संरक्षक के रूप में कार्य करता है।

### राष्ट्रीय संग्रहालय में जीर्णोद्धार

संरक्षण विभाग द्वारा शुरू की गई उल्लेखनीय बहाली परियोजनाओं में रक्षा मंत्रालय में दीवार चित्रों का संरक्षण और पुनर्स्थापन और वित्त मंत्रालय में चित्रों का परिरक्षण है। ये प्रयास न केवल संग्रहालय के संग्रह की सुरक्षा बल्कि सरकारी संस्थानों में रखे गए महत्वपूर्ण राष्ट्रीय खजानों के लिए भी विभाग की प्रतिबद्धता को उजागर करते हैं।

1950 में संग्रहालय के साथ स्थापित संरक्षण प्रयोगशाला, सावधानीपूर्वक पुनरुद्धार प्रयासों के माध्यम से इन खजानों को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सूक्ष्म अध्ययन और एक्स-रे प्रतिदीप्ति जैसी वैज्ञानिक तकनीक, विभिन्न कार्बनिक और अकार्बनिक कलाकृतियों के संरक्षण में सहायता करती हैं।

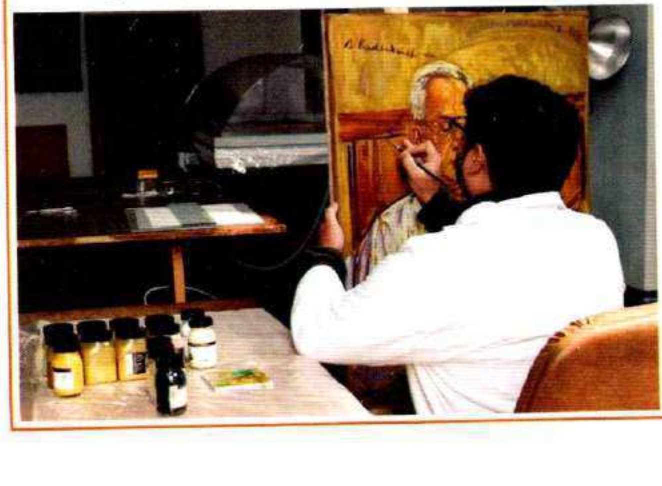

### राष्ट्रीय आधुनिक कला गैलरीः समकालीन कलात्मक विरासत का संरक्षक

आधुनिक भारतीय कला को बढ़ावा देने और संरक्षित करने के समर्पण में 1954 में स्थापित नेशनल गैलेरी ऑफ़ मॉडर्न आर्ट (एनजीएमए) या राष्ट्रीय आधुनिक कला गैलरी भारत की समकालीन कलात्मक विरासत के एक सतर्क प्रबंधक के रूप में खड़ा है। ईमानदारी से, एनजीएमए की प्रमुख गैलरियों की जलवायु परिस्थितियों को पूरे वर्ष एक केंद्रीय वातानुकूलन संयंत्र द्वारा नियंत्रित किया जाता है, जो नाजुक कलाकृतियों के संरक्षण के लिए आवश्यक स्थिर वातावरण प्रदान करता है। इसके अलावा, पुनर्स्थापक कला के कार्यों का समय-समय पर निरीक्षण करता है, और आवश्यकतानुसार पेशेवर रूप से क्षतिग्रस्त टुकड़ों को बहाल करता है।

पुनर्स्थापना से पहले और बाद की कलाकृतियों का दस्तावेजीकरण करने वाली तस्वीरें, प्रक्रिया के विभिन्न चरणों को प्रदर्शित करती हैं; आगे के शोध और भविष्य के संदर्भ के लिए सावधानीपूर्वक बनाए रखी जाती हैं।

संक्षेप में, राष्ट्रीय संग्रहालय और राष्ट्रीय आधुनिक कला गैलरी भारत के कलात्मक खजाने को संरक्षित करने, आने वाली पीढ़ियों के लिए उनकी दीर्घायु और पहुंच सुनिश्चित करने के लिए कठोर संरक्षण प्रथाओं को लागू करने की राष्ट्रीय जिम्मेदारी को निभाते हैं। ❑

*स्रोतः राष्ट्रीय संग्रहालय, एनजीएमए*